चरनदास जी की बानी

॥ दूसरा भाग ॥

जिस में

उनके ग्रंथ के अति महोहर और हृदय वेधक भजन,
चौपाई, दोहे आदिक, कई प्राचीन हस्त
लिखित पुस्तकों से चुन कर मुख्य मुख्य
अंगों और रागों के अनुसार
यथाक्रम रक्खे गये हैं

और

गूढ़ कड़ियों व कड़े या अनूठे शब्दों के अर्थ व
संकेत भी नोट में लिख दिये गये हैं

प्रकाशक
बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

मूल्य १।)

॥ अंगों का सूचीपत्र ॥

नाम अंग और उसके आधीन विषयों का

॥ शब्दों की सूची ॥

चरनदासजी की बानी

दूसरा भाग

भेद बानी

शब्द १

॥ होली राग धनाश्री ॥

गुरु दूती[1] बिन सखी पीव न देखो जाय ।
भावैं तुम जप तप करि देखो भावैं तीरथ न्हाय ॥ १ ॥
पाँच सखी पच्चीस सहेली अति चातुर अधिकाय ।
मोहिं अयानी जानि कै मेरो बालम लियो लुकाय[2] ॥ २ ॥
वेद पुरान सबै जो ढूँढ़े स्रुति इस्मृति सब धाय ।
आनि धर्म औ क्रिया कर्म में दीन्हो मोहिं भरमाय ॥ ३ ॥
भटकत भटकत जन्मै हारी चरन सखी गहे आय ।
सुकदेव साहब किरपा करिकै दीन्हो अलख लखाय ॥ ४ ॥
देखत हीं सब भ्रम भय भागे सिर सूँ गई बलाय ।
चरनदास जब प्रीतम पायो दरसन कियो अघाय ॥ ५ ॥

शब्द २

॥ राग केदारा ॥

अवधू सहसदल अब देख ।
सेत रंग जहँ पँखरो[3] छबि अग्र डोर बिसेख ॥ १ ॥
अमृत बर्षा होत अति झरि तेज़ पुंज प्रकास ।
नाद अनहद बजत अद्भुत महा ब्रह्म बिलास ॥ २ ॥
घंट[4] किंकिनि[4] मुरलि[4] बाजे संख[4] धुनि मन मान ।
ताल[4] भेरि[4] मृदंग[4] बाजत सिंधु गरजन जान ॥ ३ ॥

---

(१) बिचौलिया । (२) छिपाय । (३) कँवल की पखरी । (४) बाजों के नाम ।

काल की जहँ पहुँच नाहीं अमर पदवी पाव।
जीति आठौ सिद्धि ठाढ़ी गगन मद्धे आव ॥ ४ ॥
करै गुरु परताप करनी जाय पहुँचै सोय।
चरनदास सुकदेव किरपा जीव ब्रह्म होय ॥ ५ ॥

शब्द ३

॥ राग बिहागरा ॥

सब जग पाँच तत्व को उपासी ॥ टेक ॥
तुरियातीत सबन सूँ न्यारा अबिनासी निर्बासी ॥ १ ॥
कोई पूजै देवल मूरत सो पृथ्वी तत जानो ॥ २ ॥
कोई न्हावै पूजै तीरथ सो जल को तत मानो ॥ ३ ॥
अग्निहोत्र अरु सूरज पूजा सो पावक तत देखा ॥ ४ ॥
पवन खैंच कुंभक को राखै वायु तत्त को लेखा ॥ ५ ॥
कोई तत्व अकास[1] को पूजै ता को ब्रह्म बतावै ॥ ६ ॥
जो सब के देखन में आवै सो क्यों अलख कहावै ॥ ७ ॥
परम तत्व[2] पाँचो से आगे गुरु सुकदेव बखानैं ॥ ८ ॥
चरनदास निस्चै मन आनो बिरला जन कोइ जानै ॥ ९ ॥

शब्द ४

॥ राग परज ॥

सुधा रस कैसे पैये हो।
कूप कहाँ केहि ठौर है कैसे करि लहिये हो ॥ १ ॥
नेजू[3] कित कित गागरी कित भरने वाली हो।
कैसे खुलै कपाट हीं को ताला ताली हो ॥ २ ॥
कौन समय किस ग्रह बिपै अँचवै किन माहीं हो।
तुमसे[4] जानैं भेद कूँ अरु बहुतक नाहीं हो ॥ ३ ॥

---

(१) चिदाकाश (चैतन्य आकाश) जिसको कोई कोई विद्याज्ञानी ब्रह्म मानते हैं। (२) शब्द चैतन्य अर्थात् वह जौहर जिसको संतों ने शब्द करके पुकारा है। (३) लेजुर, रस्सी। (४) तुम्हारे समान।

पीकर किस कारज लगै अरु स्वाद बतावो हो ।
फल या का कहि दीजिये सब खोलि जतावो हो ॥ ४ ॥
सुकदेव सूँ पूँछन करै यह चरनहिँ दासा हो ।
किरपा करिकै कीजिये मेरि पूरन आसा हो ॥ ५ ॥

शब्द ५

॥ राग सोरठ ॥

जब गुरु शब्द नगरे बाजैं ॥ टेक ॥
पाँच पचीसौ बड़े मवासी[1] सुनि के डंका भाजैं ॥ १ ॥
हद्द दस्तक ले ज्ञान सजावल जाय नगर के माहीं ॥ २ ॥
हरि के धाम अजन कर[2] माँगे चित्त चौधरी पाहीं ॥ ३ ॥
कानूँगोय लोभ के खोटे छल बल पाहीं झूठे ॥ ४ ॥
काम किसान औ मोह मुकद्दम सबै बाँधि कर लूटे ॥ ५ ॥
तृस्ना आमिल मद को मातो पकरि गाँव सूँ काढ़ै ॥ ६ ॥
मन राजा को निस्चल झंडा प्रेम प्रीत हित गाड़ै ॥ ७ ॥
सुबुधि दिवान सील को बक्सी जत को हाकिम भारी ॥ ८ ॥
धर्न कर्म संतोष सिपाही जाके अज्ञाकारी ॥ ९ ॥
साँच करिन्दा औ पटवारी धीरज नेम बिचारै ॥ १० ॥
दया छिमा औ बड़ी दीनता पूरी जमा सँभारै ॥ ११ ॥
मगन होय चौकस कन[3] करिकै सुमति जेवरी[4] मापै ॥ १२ ॥
दरसन द्रव्य ध्यान को पूरन बाँटा पावै आपै ॥ १३ ॥
श्री सुकदेव अमल करि गाढ़ो सूबस देस नसावै ॥ १४ ॥
चरनदास हूँ तिन को नायब तत परवाना पावै ॥ १५ ॥

---

(१) जबरदस्त । (२) महसूल, लगान । (३) खेत की पैदावार का कूत या तख्मीना ।
(४) डोरी ।

शब्द ६

॥ राग करखा ॥

परसिया देस जहँ भेस नाहीं ।
घाट तिस लखि जहाँ बाट सूझै नहीं
सुरति के चाँदने संत जाई ॥ १ ॥
चंद खोड़स दिपैं गंग उलटी बहै
सुखमना सेज पर लम्प[1] दमकै ।
तासु के ऊपरै अमी को ताल है
झिलमिली जोत परकास चमकै ॥ २ ॥
चारि जोजन परे सून्य अस्थान है
तेज अति सून्य परलोक राजै ।
द्वार पच्छिम धसे मेरु हीं दगड हो
उलट करि आय छाजे बिराजै ॥ ३ ॥
नूर जगमग करै खेल आगाध है
वेद हूँ कहे नहिं पार पावैं ।
गुरुमुखी जाइ हैं अमर पद पाइ हैं
सीस का लोभ तजि पंथ धावैं ॥ ४ ॥
तीन सुन छेदि रनजीत चौथे बसै
जन्म औ मरन फिर नाहिं होई ।
चरनदास करि वास सुकदेव बकसीस सूँ
पूज वेगम पुरी अमर सोई ॥ ५ ॥

शब्द ७

॥ राग सोरठ ॥

गुरु बिन वह घर कौन दिखावै ।
जेहिं घर अग्नि जलै जल माहीं यह अचरज दरसावै ॥ १ ॥

---

(१) जोति ।

काम धेनु जहँ ठाढ़ी सोहैं नैन हाथ बिन दुहना ।
घाये[1] दूधा थोड़ा देवै भूखे देवै दूना ॥ २ ॥
पीवैं जन जगदीस पियारे गुरुगम बहुत अघावैं ।
मूरख कायर और अजोगी सो ये नेक न पावैं ॥ ३ ॥
अमृत अँचवै वा पद पहुँचे महा तेज को धारै ।
होय अमर निस्चल ह्वै बैठे आवा गवन निवारै ॥ ४ ॥
भेद छिपावै तौ फल पावै काहू से नहिं कहिये ।
वह अद्भुत है ठौर अनूठी बड़ भागन सूँ लहिये ॥ ५ ॥
या साधन के बहु रखवारे ऋषि मुनि देवत[2] जोगी ।
करन न देवैं बुधि हरि लेवैं होय न गोरस भोगी ॥ ६ ॥
लोभी हलके को नहिं दीजे कहैं सुकदेव गोसाईं ।
चरनदास त्यागी बैरागी ताहि देहु गहि बाँहीं ॥ ७ ॥

शब्द ८

॥ राग सोरठ ॥

गुरु गम मगन भया मन मेरा ।
गगन मंडल में निज घर कीन्हो पंच बिषे नहिं घेरा ॥ १ ॥
प्यास छुधा निद्रा नहिं व्यापी अमृत अँचवन कीन्हा ।
छूटी आस बास नहिं कोई जग में चित नहिं दीन्हा ॥ २ ॥
दरसी जोति परम सुख पायो सब ही कर्म जलावै ।
पाप पुन्न दोऊ भय नाहीं जन्म मरन बिसरावै ॥ ३ ॥
अनहद आनंद अति उपजावै कहि न सकूँ गति सारी ।
अति ललचावै फिर नहिं आवै लगी अलख सूँ यारी ॥ ४ ॥
हंस कमल दल सतगुरु राजैं रुचि रुचि दरसन पाऊँ ।
कहि सुकदेव चरन हीं दासा सब बिधि तोहि बताऊँ ॥ ५ ॥

---

(१) अघाये । (२) देवता ।

शब्द ९

॥ राग रामकली ॥

यह अच्छर कोइ बिरला पावै ।
जा अच्छर के लाग न बिंदी सतगुरु सैनहिं सैन बतावै ॥ १ ॥
छर ही नाद बेद अरु पंडित छर ज्ञानी अज्ञानी ।
बाँचन अच्छर छर ही जानो छरही चारौ बानी ॥ २ ॥
ब्रह्मा सेस महेसर छर ही छर ही त्रैगुन माया ।
छर ही सहित लिये औतारा छर हाँ तक जहँ माया ॥ ३ ॥
पाँचो मुद्रा जोग जुक्ति छर छर ही लगै समाधा ।
आठौ सिद्धि मुक्ति फल छरही छर ही तन मन साधा ॥ ४ ॥
रवि ससि तारा मंडल छर ही छर ही धरनि अकासा ।
छर ही नीर पवन अरु पावक नर्क स्वर्ग छर बासा ॥ ५ ॥
छर ही उतपति परलय छर ही छर ही जानन हारा ।
चरनदास सुकदेव बतावैं निःअच्छर है सब सूँ न्यारा ॥ ६ ॥

शब्द १०

॥ राग धनाश्री ॥

जो जन अनहद ध्यान धरै ॥ टेक ॥
पाँचौ निरबल चंचल थाकै जीवत ही जु मरै ॥ १ ॥
सोधै मूलबंध दै राखै आसन सिद्ध करै ॥ २ ॥
त्रिकुटी सुरति लाय ठहरावै कुंभक पवन भरै ॥ ३ ॥
घन गरजै अरु बिजुली चमकै कौतुक गगन धरै ॥ ४ ॥
बहुत भाँति जहँ बाजन बाजैं सुनि सुनि सिंधु अरै[१] ॥ ५ ॥
सहज सहज में हो परकासा बाधा सकल हरै[२] ॥ ६ ॥
जग की आस बास सब टूटै ममता मोह जरै ॥ ७ ॥
सून्य सिखर पर आपा बिसरै काल सूँ नाहिं डरै ॥ ८ ॥
चरनदास सुकदेव कहत हैं सब गुन ध्यान धरै ॥ ९ ॥

(१) ऐसे मधुर बाजे कि जिनकी धुनि से समुद्र की लहरें स्थिर हो जायँ। (२) दूर हो।

शब्द ११

॥ राग धनाश्री ॥

जब से अनहद घोर सुनी ।
इन्द्री थकित गलित मन हूवा आसा सकल भुनी ॥ १ ॥
घूमत नैन सिथिल भइ काया अमल जु सुरत सनी ।
रोम रोम आनंद उपज करि आलस सहज भनी ॥ २ ॥
मतवारे ज्यों शब्द समाये अन्तर भींज कनी ।
करम भरम के बंधन छूटे दुबिधा बिपति हनी ॥ ३ ॥
आपा बिसरि जक्त कूँ बिसरो कित रहिँ पाँच जनी ।
लोक भोग सुधि रही न कोई भूले ज्ञानि गुनी ॥ ४ ॥
हो तहँ लीन चरनहीं दासा कहै सुकदेव मुनी ।
ऐसा ध्यान भाग सूँ पैये चढ़ि रहै सिखर अनी[1] ॥ ५ ॥

शब्द १२

॥ राग धनाश्री ॥

सहज गति ज्ञान समाधि लगाई ।
रूप नाम जहँ किरिया छूटी, हौं मैं रहन न पाई ॥ १ ॥
बिन आसन बिन संजम साधन, परमातम सुधि पाई ।
सिव सक्ती मिलि एक भये हैं, मन माया निहुराई[2] ॥ २ ॥
मगन रहौं दुख सुख दोउ मेटे, चाह अचाह मिटाई ।
जीवन मरन एक सूँ लागै, जब तें आप गँवाई ॥ ३ ॥
मैं नाहीं नख सिख हरि राजैं, आदि अन्त मध्याई ।
संका कर्म कौन कूँ लागै, का की होय मुक्ताई ॥ ४ ॥
सकल आपदा व्याधि टरी सब, दुई कहाँ मो माहीं ।
सब हमहीं रामै नहिँ पैये, सब रामै हम नाहीं ॥ ५ ॥
नित आनन्द काल भय नाहीं, गुरु सुकदेव समाधी ।
चरनदास निज रूप समाने, यह तो समझ अगाधी ॥ ६ ॥

(१) नोक। (२) झुके, जेर हुए।

शब्द १३

॥ राग करखा ॥

ब्रह्म दरियाव नहिँ वार पारा ।
आदि अरु मध्य कहुँ अन्त सूझै नहीं
नेत ही नेत बेदन पुकारा ॥ १ ॥
मूल परकिर्त सी बहुत लहरैं उठैं
सकै को पाय गुन हैं अपारा ।
बिरंच[1] महादेव से मीन बहुतै जहाँ
होयँ परगट कभी गोत मारा ॥ २ ॥
तासु में बुदबुदे अंड उपजैं मिटैं
गुरु दई दृष्टि जा सूँ निहारा ।
छका छबि देखि कै अतिथि का भेख करि
जगे जब भाग निरखी बहारा ॥ ३ ॥
मरजिया[2] पैठिया थाह पाई नहीं
थका ह्वाहीं रहा फिर न आया ।
गया था लाभ कूँ मूल खोया सबै
भया आस्चर्ज आपन गँवाया ॥ ४ ॥
पाल[3] बिन सिद्धि अरु निरा आनंद है
आप ही आप हो निरअधारा ।
चरनदास सुकदेव दोऊ तहाँ रल मिले,
तुरत हीं मिट गया खोज सारा ॥ ५ ॥

शब्द १४

॥ राग सीठना ॥

सुन सुरत रँगीली हो कि हरि सा यार करो ॥ टेक ॥
जब छूटे बिष्न बिकार कि भौजल तुरत तरौ ॥ १ ॥

---

(१) ब्रह्मा । (२) जो मोती निकालने को समुद्र में डुबकी लगाते हैं। (३) रोक, परदा।

तुम त्रैगुन छैल[1] बिसारि गगन में ध्यान धरौ ॥ २ ॥
रस अमृत पीवो हो कि विषया सकल हरौ ॥ ३ ॥
करि सील संतोष सिंगार छिमा की माँग भरौ ॥ ४ ॥
अब पाँचो तजि लगवार अमर घर पुरुष बरो ॥ ५ ॥
कहैं चरनदास गुरु देखि पिया के पाँव परो ॥ ६ ॥

शब्द १५

॥ राग सीठना ॥

टुक रंग महल में आव कि निरगुन सेज बिछी ।
जहँ पवन गवन नहिँ होय जहाँ जा सुरति बसी ॥ १ ॥
जहँ त्रैगुन बिन निर्बान जहाँ नहिँ सूर ससी ।
जहँ हिल मिलि कै सुख मान मुक्ति की होय हँसी ॥ २ ॥
जहँ पिय प्यारी मिलि एक कि आसा दुइ नसी ।
जहँ चरनदास गलतान कि सोभा अधिक लसी ॥ ३ ॥

शब्द १६

॥ राग सोरठ ॥

ऐसा देस दिवाना रे लोगो जाय सो माता होय ।
बिन मदिरा मतवारे झूमैं जन्म मरन दुख खोय ॥ १ ॥
कोटि चंद सूरज उजियारो रबि ससि पहुँचत नाहीं ।
बिना सीप मोती अनमोलक बहु दामिनि दमकाहीं ॥ २ ॥
बिन ऋतु फूले फूल रहत हैं अमृत रस फल पागे ।
पवन गवन बिन पवन बहत है बिन बादर झरि लागे ॥ ३ ॥
अनहद शब्द भँवर गुंजारैं संख पखावज बाजैं ।
ताल घंट मुरली घनघोरा भेरि दमामे गाजैं ॥ ४ ॥
मेघ गर्जना अति हीं भारी घुंघुरू गति झनकारैं ।
भा नृत्य करैं बिन पग सूँ बिन पायल ठनकारैं ॥ ५ ॥

---

(१) छैल चिकनिया ।

गुरु सुकदेव करैं जब किरपा ऐसो नगर दिखावैं ।
चरनदास वा पग के परसे आवा गवन नसावैं ॥ ६ ॥

शब्द १७

॥ राग होली ॥

पाँच सखी लेलार[1] हेली काया महल पग धरिये ॥टेक॥
जोग जुक्ति डोला करौ हेली प्रान अपान कहार ॥ १ ॥
कुंज कुंज सब देखिये हेली नाना बाग बहार ॥ २ ॥
मान सरोवर न्हाइये हेली सदा बसन्त निहार ॥ ३ ॥
बिना सीप मोती बने हेली बिन गूँद[2] फूलन हार ॥ ४ ॥
बिन दामिन चमकार है हेली बिन सूरज उँजियार ॥ ५ ॥
अनहद उत बाजे बजैं हेली अचरज बहुतक ख्याल ॥ ६ ॥
तेज पुंज की सेज पै हेली कागा होहिँ मराल ॥ ७ ॥
श्री सुकदेव कृपा करैं हेली जब पावै यह भेद ॥ ८ ॥
चरनदास पिय सूँ मिलै हेली छूटैं जग के खेद ॥ ९ ॥

शब्द १८

॥ राग मलार ॥

साधो समुझौ अलख अरूपा ।
गुप्त सूँ गुप्त प्रगट सूँ परगट, ऐसो है निज रूपा ॥ १ ॥
भींजै नहीं नीर सूँ वह तत, ताहि सस्त्र नहिँ काटै ।
छोटा मोटा होय न कबहूँ, नहीं घटै नहिँ बाढ़ै ॥ २ ॥
पवन कभी नहिँ सोखै ता कूँ, पावक तेज न जारै ।
सीत उस्न दुख सुख नहिँ पहुँचै, ना वह मरै न मारै ॥ ३ ॥
इक रस चेतन अचरज दरसै, जा सम तुल नहिँ कोई ।
ता पटतर कोइ दृष्टि न आवै, वही वही पुनि वोई ॥ ४ ॥
भीतर बाहर पूरि रह्यो है, अगड पिगड सूँ न्यारा ।
सुकदेवा गुरु भेद बतायो, चरनहिँ दासा वारा ॥ ५ ॥

(१) साथ । (२) बिना गुथे हुए ।

शब्द १६

॥ राग धनाश्री ॥

निरंतर अटल समाधि लगाई ।
ऐसी लगी टरै नहिं कबहूँ करनी आस छुटाई ॥ १ ॥
काकौ जप तप ध्यान कौन कूँ कौन करै अब पूजा ।
कियो बिचार नेक नहिं निकसै हरि बिन और न दूजा ॥ २ ॥
मुद्रा पाँच सहज गति साधी आलस आस नसोई[1] ।
सब रस भूल ब्रह्म जब सोधा आप बिसर्जन होई ॥ ३ ॥
भूलो बंध मुक्ति गति साधन ज्ञान बिबेक भुलाना ।
आतम अरु परमातम भूला मन भयो तत गलताना ॥ ४ ॥
अचल समाधि अंत नहिं ता को गुरु सुकदेव बताई ।
चरनदास की खोज न पैये सागर लहरि समाई ॥ ५ ॥

शब्द २०

॥ राग केदारा व सोरठ ॥

सो लखि हम निर्गुन झरि लाई ।
जहाँ न बेद कितेब पहुँचे नहीं ठकुराई ॥ १ ॥
चारि बरन आस्रम नाहीं नहीं कर्मना कोई ।
नरक अरु बैकुंठ नाहीं नहीं तन ताई ॥ २ ॥
प्रेम अरु जहँ नेम नाहीं लगन ना लाई ।
आठ अंग जहँ जोग नाहीं नहीं सिद्धाई ॥ ३ ॥
आदि अरु जहँ अन्त नाहीं नहीं मध्याई ।
एक ब्रह्म अखण्ड अविचल माया ना राई ॥ ४ ॥
ज्ञान अरु अज्ञान नाहीं नहीं मुक्ताई ।
चरनदास सुकदेव सम[2] तहँ दुई जरि जाई ॥ ५ ॥

---

(१) नाश हुई । (२) बराबर, एक ।

शब्द २१

॥ राग हिंडोलना ॥

झूलत हरि जन संत भक्ति हिंडोलने ॥टेक॥
नाम के दृढ़ खम्भ रोपे प्रेम डोरी लाय।
टेक पटरी बैठ सजनी अति अनंद बढ़ाय ॥ १ ॥
ध्यान के जहँ मेघ बरसैं होय उमंग हुलास।
गुरुमुखी जहँ समझ भीजैं पूर्न हरि के दास ॥ २ ॥
बुधि बिवेक बिचारि गावैं सखी सहेली साथ।
अगम लीला रटैं सजनी जहाँ ब्रह्म बिलास ॥ ३ ॥
परम गुरु श्री जनक झूलैं गुरु सुकदेव।
चरनदास सखि सदा झूलैं कोइ न पावै भेव ॥ ४ ॥

शब्द २२

॥ राग करखा ॥

गुरु दया जोग यहि बिधि कमायो ॥टेक॥
मूल कूँ सोधि संकोच करि संखिनी
खैंच आपान उलटो चलायो ॥ १ ॥
बंध पर बंध जब बंध तीनो लगैं
पवन भइ थकित नभ गर्जि आयो ॥ २ ॥
द्वादसा पलट करि सुरति दो दल धरी
दसो परकार अनहद बजायो ॥ ३ ॥
रोक जब नवन कूँ द्वार दसवें चढ़ी
सून्य के तख्त अनँद बढ़ायो ॥ ४ ॥
सहस्र दल कमल को रूप अद्भुत महा
अमी रस उमंग छा झरि लगायो ॥ ५ ॥
तेज अति पुंज पर लोक जहँ जगमगे
कोटि छवि भानु परकास लायो ॥ ६ ॥

उनमुनी और चित हेत करि बसि रहो
देखि निज रूप मनुवाँ मिलायो ॥ ७ ॥
काल अरु ज्वाल जग ब्याधि सब मिटि गई
जीव सूँ ब्रह्म गति बेगि पायो ॥ ८ ॥
चरनदास रनजीत सुकदेव की दया सूँ
अभय पद परसि अवगति समायो ॥ ९ ॥

शब्द २३

॥ राग सारंग व बिलावल व सोरठ ॥

साधो अजब नगर अधिकाई ।
औघट घाट बाट जहँ बाँकी उस मारग हम जाई ॥ १ ॥
स्रवन बिना बहु बानी सुनिये बिन जिभ्या स्वर गावैं ।
बिना नैन जहँ अचरज दीखे बिना अंग लिपटावैं ॥ २ ॥
बिना नासिका बास पुष्प की बिना पाँव गिर[1] चढ़िया ।
बिना हाथ जहँ मिली धाय कै बिन पाधा जहँ पढ़िया ॥ ३ ॥
ऐसा घर बड़भागी पाया पहिरि गुरू का बाना ।
निस्चल ह्वै के आसा मारी मिटि गयो आवन जाना ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव करी जब किरपा अनुभौ बुद्धि प्रकासी ।
चौथे पद में आनंद भारी चरनदास जहँ बासी ॥ ५ ॥

शब्द २४

॥ राग सीठना ॥

टुक निर्गुन छैला सूँ, कि नेह लगाव री ।
जा को अजर अमर है देस, महल बेगमपुर री ॥ १ ॥
जहँ सदा सोहागिन होय, पिया सूँ मिलि रहु री ।
जहँ आवा गवन न होय, मुक्ति चेरी तेरी ॥ २ ॥
कहैं चरनदास गुरु मिले, सोई ह्वाँ रहु बौरी ।
तब सुख सागर के बीच, कलहरी[2] ह्वै रहु री ॥ ३ ॥

---

(१) पहाड़। (२) कलवारिन।

शब्द २५

॥ राग सीठना ॥

तू सुन हे लंगर बौरी ॥ टेक ॥

तू पाँचौ घेरि पचीसो घेरी बिषै बासना की है चेरी।
बारी बारी[1] दौरी ॥ १ ॥

तैं पिय भूली चौरासी डोली अंग अंग के सुख में फूली।
माया लाई ठौरी[2] ॥ २ ॥

तैं काम क्रोध सूँ नेह लगायो मनमाना सब जग भरमायो।
मोह यार बाँको री ॥ ३ ॥

चरनदास सुकदेव बतावैं निर्गुन छैला तोहिं मिलावैं।
जो टुक चेतन हो री ॥ ४ ॥

शब्द २६

॥ राग हेली ॥

वह घर कैसा होय हेली जित के गये न बाहुरे[3]।
अमर पुरी जा सूँ कहैं हेली मुक्ति धाम है सोय ॥ टेक॥
बिकट घाट वा ठौर को हेली सठ नहिँ पावैं पंथ।
गुरुमुख ज्ञानी जाइ हैं हरि सूँ सन्मुख संत ॥ १ ॥
त्रैगुन मति पहुँचै नहिँ हेली छहौं ऋतू ह्वाँ नाहिँ।
रवि ससि दोऊ ह्वाँ नहीं नहीं धूप नहिँ छाँहिँ ॥ २ ॥
अवधि नहीं काया नहिँ हेली कलह कलेस न काल।
संसय सोक न पाइये नहिँ माया कूँ जाल ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव दया करैं हेली चरनदास लहै देस।
बिन सतगुरु नहिँ पावई जो नाना कर भेस ॥ ४ ॥

शब्द २७

॥ राग सोरठ ॥

हो अवगति जो जानै सोई जानै।
सन की दृष्टि परे अविनासी कोइ कोइ जन पहिचानै ॥ १ ॥

(१) बार बार। (२) निवास, ठिकाना। (३) लौटे।

रेख जहाँ नहिँ खिंच सकै रे ठहरै ना ह्वाँ राई ।
चित्त चितेरा[1] ना सकै रे पुस्तक लिखा न जाई ॥ २ ॥
सेत स्याम नहिँ राता[2] पीरा हरी भाँति नहिँ होई ।
अति आसूँघ अदृष्ट अकथ है कहि सुनि सकै न कोई ॥ ३ ॥
सर्बस में अरु सब देसन में सर्ब अंग सब माहीं ।
कटै जलै भीजै नहिँ छीजै हलै चलै वह नाहीं ॥ ४ ॥
नहिँ गाढ़ा नहिँ झीना कहिये नहिँ सूच्छम नहिँ भारी ।
बाला तरुना बूढ़ा नाहीं ना वह पुरुष न नारी ॥ ५ ॥
नहीं दूर नहिँ निकट हमारे नहीं प्रगट नहिँ गूझै[3] ।
ज्ञान आँख की पलक उघारो जब देखो रे सूझै ॥ ६ ॥
वा सूँ उतपति परलय होई वह दोऊ तें न्यारा ।
चरनदास सुकदेव दया सूँ सोई तत्त निहारा ॥ ७ ॥

शब्द २८
॥ राग ईमन ॥

सखी री हिलि मिलि रहिया पीव ॥ टेक ॥
पुष्प मध्य ज्यों गंध बिराजै पिण्ड माहिँ ज्यों जीव ॥ १ ॥
जैसे अग्नि काठ के अंतर लाली है मेंहदीव ॥ २ ॥
माटी में भाँड़े हैं तैसे दूध मध्य ज्यों घीव ॥ ३ ॥
सुकदेवा गुरु तिमिर नसायो ज्ञान दियो कर दीव[4] ॥ ४ ॥
चरनदास कहैं परगट दरसो अमर अखंडित सीव[5] ॥ ५ ॥

शब्द २९
॥ राग बिलास बिहागरा ॥

गुरू बिन कौन डुबोवन हारा ।
ब्रह्म समुद्र में जो कोइ बूड़ो छुटि गये सकल बिकारा ॥ १ ॥
सिंधु अथाह अगाध अचल है जा को वार न पारा ।
वा की लहरि मिटत वाही में कौन तरै को तारा ॥ २ ॥

त्रैगुन रहित सदा हीं चेतन ना काहू उनहारा[1] ।
निराकार आकार न कोई निर्मल अति निर्धारा ॥ ३ ॥
अकरी[2] अलख अरूप अनादी तिमिर नहीं उजियारा ।
ता में अखण्ड दिपत[3] ऐसे करि ज्यों जल मद्धे तारा ॥ ४ ॥
काल जाल भय सूती नाहीं तहाँ नहीं भ्रम भारा ।
चरनदास सुकदेव दया सूँ बूड़ि गये ही पारा ॥ ५ ॥

शब्द ३०

॥ राग धनाश्री व बिलावल व सोरठ ॥

साधो भाई यह जग यों सत नाहीं ।
मीन पहार समुद बिच मिरगा खेत अकासे माहीं ॥ १ ॥
जल की पोट कोट धूवाँ को अखिल ब्रह्म को तीरं ।
बाँझ को पूत सींग सस्सा[4] को मृग तृस्ना को नीरं ॥ २ ॥
स्वप्न को भूप द्रव्य स्वपने को अरु जंगल को द्वारं ।
गनिका सील नाच भूतन को नारि सोँ ब्याहत नारं ॥ ३ ॥
मावस को ससि रैन को सूरज दूध नरन की छाती ।
यह सब कहनि कहावनि देखी चींटी ले भागी हाथी ॥ ४ ॥
ऐसेहि झूँठ जगत सच नाहीं भेद बिचारो पायो ।
चरनदास सुकदेव दया सूँ साँचहि साँच मिलायो ॥ ५ ॥

शब्द ३१

॥ राग धनाश्री ॥

कोइ जानै संत सुजान उलटे भेद कूँ ॥ टेक ॥
बृच्छ चढ़ो माली के ऊपर धरती चढ़ी अकास ।
नारि पुरुष बिपरीत भये हैं देखत आवै हाँस ॥ १ ॥
बैल चढ़ो संकर के ऊपर हंस ब्रह्म के सीस ।
सिंह चढ़ो देवी के ऊपर गुरुहीं की बक्सीस ॥ २ ॥

---

(१) पटतर, मिस्ल । (२) अकर्ता । (३) चमकता है । (४) खरहा ।

नाव चढ़ी केवट के ऊपर सुत की गोदी माय।
जो तू भेदी अमर नगर को तौ तू अर्थ बताय ॥ ३ ॥
चरनदास सुकदेव सहाई अब कह करिहै काल।
बाँबी उलटि सर्प में पैठी जब सूँ भये निहाल ॥ ४ ॥

शब्द ३२

॥ राग मलार॥

चहुँ दिस झिलमिल झलक निहारी।
आगे पीछे पहिने बायें तल ऊपर उँजियारी ॥ १ ॥
दृष्टि पलक त्रिकुटी ह्वै देखै आसन पद्म लगावै।
संजम साधै दृढ़ आराधै जब ऐसी सिधि पावै ॥ २ ॥
बिन दामिनि चमकार बहुत हीं सीप बिना लर मोती।
दीप मालिका बहु दरसावैं जगमग जगमग जोती ॥ ३ ॥
ध्यान फलै तब नभ के माहीं पूरन हो गति सारी।
चाँद घने सूरज अनकी[1] ज्यों सूभर[2] भरिया भारी ॥ ४ ॥
यह तौ ध्यान प्रतच्छ बतायो सरधा होय तो कीजै।
कहि सुकदेव चरन हीं दासा सो हम सूँ सुनि लीजै ॥ ५ ॥

शब्द ३३

॥ राग सोरठ ॥

हमारे गुरु मारग बतलाया हो।
आनि देव की सेवा त्यागी अज[3] अबिनासी ध्याया हो ॥ १ ॥
हरि पूरन परस्यौं निस्चै सूँ छाँड़यौं झूठी माया हो।
इक रस आतम नित ही जानौं छिन भंगी है काया हो ॥ २ ॥
चाहो मुक्ति करो तन किरिया[4] भर्म अधिक भरमाया हो।
बो करि पेड़ बबूल सूल के आम कहो किन पाया हो ॥ ३ ॥

---

(१) अनेक। (२) बालू के कण जो धूप में चमकते हैं। (३) अजर, अजन्मा। (४ तन या से मुक्ति नहीं हो सकती।

अपना खोज किया नहिं कबहूँ जल पाहन भटकाया हो ।
जैसे फल सेवत सेमर को कीर[1] अधिक पछताया हो ॥ ४ ॥
ज्ञान पदारथ कठिन महानिधि बिन भेदी किन पाया हो ।
चरनदास घट सोहं सोहं ता में उलटि समाया हो ॥ ५ ॥

शब्द ३४
॥ राग बिहागरा ॥

गुप्त मते की बात हेली जानै सोइ जानै ।
पसू ज्ञान इजमत[2] कूँ देखो अन भुस एकै ठानै ॥ १ ॥
चलनी की गति सब की मति है मन में अधिक सयानै ।
गहि असार सार कूँ डारै निस्चल बुधि नहिं आनै ॥ २ ॥
हूँ[3] गूँगो जग को नहिं सूझै सैन नहीं कोइ मानै ।
का सूँ कहूँ अरु को सुनै सजनी कहूँ तो को पहिचानै ॥ ३ ॥
सत्य ब्रह्म को जानत नाहीं मुरख मुग्ध अयानै ।
चरनदास समुझत नहिं भोंदू फिर फिर झगरो ठानै ॥ ४ ॥

शब्द ३५
॥ राग हिंडोलना ॥

झूलत गुरुमुख संत अलख हिंडोलने ॥ टेक ॥
नाभि भृकुटी खम्भ रोपे सोहं डोरी लाय ।
सुरति पटही[4] बैठि सजनी छिन आवै छिन जाय ॥ १ ॥
मन मनसा दोउ लगे झूलन धारना ले संग ।
ध्यान झोके देत सजनी भलो लागो रंग ॥ २ ॥
सखि सहेली सिमिटि आईं पेंग पेंगन नेह ।
बूँद आनंद सब भिगोई सघन बरसे मेह ॥ ३ ॥
चार बानी खड़ी गावैं महा रंगीली नार ।
मुक्ति चारो मालिनी गुहि गुहि लावैं हार ॥ ४ ॥

(१) तोता । (२) करामात । (३) गूँगे का "हूँ" करना । (४) पटरा ।

त्रिगुन बकुला उड़न लागे देखि बादल लय[1] ।
संग पिय के सदा झूलैं ता तें लगै न भय ॥ ५ ॥
चरनदास कूँ नित झुलावैं ईस झुलैं सुकदेव ।
सिव सनकादिक नारद झूलैं करि करि गुरु की सेव ॥ ६ ॥

सावन व हिंडोला झूला

शब्द १

॥ राग हिंडोलना हेली ॥

छूटे काल जंजाल हेली, चरन कमल के आसरे ।
भर्म भूत सबहीं छुटे री हेली सौन[2] नछत्तर नाल[3] ॥ टेक ॥
जंतर मंतर सब छूटे री हेली छूटे बीर मसान ।
मूठ डीठ[4] अब ना लगै री नहीं घात को बान ॥ १ ॥
सनीचर बल अब ना चलै री हेली नहीं राहु अरु केतु ।
मंगल बिरस्पति ना दहैं री नहीं भोग उन देतु ॥ २ ॥
जोति बाल परसूँ नहीं री हेली मानूँ न देवी देव ।
सतगुरु देव बताइया साँचो झूँठो भेव ॥ ३ ॥
अरसठ तीरथ ना फिरूँ री हेली पूज न पाथर नीर ।
श्री सुकदेव छुटाइया जन्म मरन की पीर ॥ ४ ॥
निस्चल होइ हरि की भई री हेली सुमिरूँ निर्मल नाँव ।
अनन्य भक्ति दृढ़ सूँ गही मारग आन न जाँव ॥ ५ ॥
गोबिंद तजि औरन भजै री हेली जाके मुखड़े छार[5] ।
चरनदास योँ कहत हैं राम उतारै पार ॥ ६ ॥

शब्द २

॥ राग सावन ॥

खि सजनी हे तेरो पिया तेरे पास ।
री बौरी इत उत भटकी क्योँ फिरै जी ॥ १ ॥

(१) समा । (२) स्रवन । (३) साध । (४) जादू टोना । (५) धूल ।

सखि सजनी हे सुरति निरति करि देख।
अरी बौरी अपने महल रंग मानिये जी ॥ २ ॥
सखि सजनी हे मान अहं सब खोय।
अरी बौरी यह जोबन थिर ना रहै जी ॥ ३ ॥
सखि सजनी हे बालम सन्मुख होय।
अरी बौरी पिछली अर[1] सब खोइये जी ॥ ४ ॥
सखि सजनी हे पिया मिलन को साज।
अरी बौरी न्हाय सिंगार बनाइये जी ॥ ५ ॥
सखि सजनी हे चित की चौकी धराय।
अरी बौरी नाइन सुमति बुलाइये जी ॥ ६ ॥
सखि सजनी हे सुचरचा अगिन जराव।
अरी बौरी नीर गरम करि न्हाइये जी ॥ ७ ॥
सखि सजनी हे जोग उबटनो लगाव।
अरी बौरी कर्म को मैल उतारिये जी ॥ ८ ॥
सखि सजनी हे करनी कंगही बहाव।
अरी बौरी बेनी मुक्ता[2] गुंधाइये जी ॥ ९ ॥
सखि सजनी हे गुरु के चरन चित लाव।
अरी बौरी सत संगति पग लागिये जी ॥ १० ॥
सखि सजनी हे लाज सिंदूर निकासि।
अरी बौरी खोलि सिंगार बनाइये जी ॥ ११ ॥
सखि सजनी हे नवधा भूषन धारि।
अरी बौरी जा सूँ पिया रिझाइये जी ॥ १२ ॥
सखि सजनी हे प्रीत को काजल आँज।
अरी बौरी प्रेम की माँग सँवारिये जी ॥ १३ ॥

---

(१) अड़, टेक। (२) मोती।

सखि सजनी हे बुधि बेसर सजि लेहि ।
अरी बौरी पान बिचारि चबाइये जी ॥ १४ ॥
सखि सजनी हे दया की मेंहदी लगाव ।
अरी बौरी साँचो रंग ना उतरै जी ॥ १५ ॥
सखि सजनी हे धीरज चूनरि लाल ।
अरी बौरी नख सिख सील सिंगारिये जी ॥ १६ ॥
सखि सजनी हे काम क्रोध तजि लोभ ।
अरी बौरी मोह पीहर[1] सूँ जिन करो जी ॥ १७ ॥
सखि सजनी हे पाँच सहेली साथ ।
अरी बौरी इन कूँ संग लीजिये जी ॥ १८ ॥
सखि सजनी हे चलो पिया के पास ।
अरी बौरी सुखमन बाट सोहावनी जी ॥ १९ ॥
सखि सजनी हे गगन मंडल पग धार ।
अरी बौरी पीव मिलै दुख सब हरै जी ॥ २० ॥
सखि सजनी हे निर्गुन सेज बिछाव ।
अरी बौरी हिलि मिलि कै रंग मानिये जी ॥ २१ ॥
सखि सजनी हे पावैगी अटल सोहाग ।
अरी बौरी अजर अमर घर निर्मल जी ॥ २२ ॥
सखि सजनी हे गुरु सुकदेव असीस ।
अरी बौरी चरनदास मनसा फलै जी ॥ २३ ॥

शब्द ३
॥ राग सावन ॥

भागो साधिन हे यहि झूले मत झूल ।
अरी हेली भर्म भूमि या देस की जी ॥ टेक ॥

---

(१) नैहर, मायका ।

भागौ साथिन हे बदरा[1] माया को रूप।
अरी हेली कुमति बूँद जित तित परैं जी ॥ १ ॥
भगौ साथिन हे कर्म बृच्छ की बेलि।
अरी हेली बारी फल लगे बिष भरे जी ॥ २ ॥
भागौ साथिन हे दुर्मति हरियर दूब।
अरी हेली छल रूपी फूले फूल हैं जी ॥ ३ ॥
भागौ साथिन हे तिरगुन बोलत मोर।
अरी हेली दम्भ कपट बकुला फिरैं जी ॥ ४ ॥
भागौ साथिन हे पाप पुन्न दोउ खम्भ।
अरी हेली नर्क[2] स्वर्ग झोटा लगै जी ॥ ५ ॥
भागौ साथिन हे मैं मेरी बँधी डोर।
अरी हेली तृस्ना पटरी जित धरी जी ॥ ६ ॥
भागौ साथिन हे झूलत चावहिं चाव।
अरी हेली नर नारी सब झूलहिं जी ॥ ७ ॥
भागौ साथिन हे तपसी जोगी गये भूल।
अरी हेली फल चाहत अरु कामना जी ॥ ८ ॥
भागौ साथिन हे आसा झुलावत नारि।
अरी हेली पाँच पचीस मिलि गावहिँ जी ॥ ९ ॥
भागौ साथिन हे या जग में ऐसी झूल।
अरी हेली चरनदास झूलत बचे जी ॥ १० ॥
भागौ साथिन हे इत तजि उत कूँ चाल।
अरी हेली अमर नगर सुकदेव के जी ॥ ११ ॥

शब्द ४

॥ राग हिंडोला हेली ॥

तरसैं मेरे नैन हेली राम मिलन कब होयगो ॥ टेक ॥
पिय दरसन बिन क्यों जिऊँ री हेली कैसे पाऊँ चैन ।
तीर्थ बर्त बहुतै किये री चित दै सुने पुरान ॥ १ ॥
बाट निहारत ही रहूँ री हेली सुधि नहिँ लीनी आय ।
यह जोबन यों ही चलो री चालो जन्म सिराय ॥ २ ॥
बिरहा दल साजे रहै री हेली छिन छिन में दुख देहि ।
मन लालन[1] के बस परो भई भाक[2] सी देहि ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव कृपा करो जी हेली दीजै बिरह छुटाय ।
चरनदास पिय सूँ मिलै सरन तुम्हारी धाय ॥ ४ ॥

शब्द ५

॥ राग हिंडोला ॥

मो बिरहिन की बात हेली बिरहिन हो सोइ जानि है ।
नैन बिछोहा जानती री हेली बिरहै कीन्हो घात ॥ टेक ॥
या तन कूँ बिरहा लगो री हेली ज्यों घुन लागो काठ ।
निस दिन खाये जातु है देखूँ हरि की बाट ॥ १ ॥
हिरदे में पावक जरै री हेली तपि नैना भये लाल ।
आँसू पर आँसू गिरैं यही हमारो हाल ॥ २ ॥
प्रीतम बिन कल ना परै री हेली कलकल[3] सब अकुलाहि ।
डिगी[4] परूँ सत[5] ना रहो कब पिय पकरैं बाँहिँ ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव दया करैं री हेली मोहिँ मिलावैं लाल ।
चरनदास दुख सब भजैं सदा रहूँ पति नाल[6] ॥ ४ ॥

---

(१) प्रीतम । (२) भट्ठा, पजाया । (३) व्याकुल । (४) गिरी । (५) सत्ता, बल । (६) साथ ।

बसंत व होली

शब्द १

॥ राग बसंत ॥

मेरे सतगुरु खेलत नित बसंत।
जा की महिमा गावत साध संत ॥ १ ॥
ज्ञान बिबेक के फूले फूल।
जहँ साखा जोग अरु भक्ति मूल ॥ २ ॥
प्रेम लता जहँ रही झूल।
सत संगति सागर के कूल ॥ ३ ॥
जहँ भर्म उड़त है ज्यौं गुलाल।
अरु चोवा चरचै निस्चय बाल ॥ ४ ॥
जहँ सील छिमा को बरसै रंग।
काम क्रोध को मान भंग ॥ ५ ॥
हरि चरचा जित है अनंत।
सुनि मुक्त होत सब जीव जंत ॥ ६ ॥
ध्यान धर्म सब जाहिँ खोय।
राम नाम की जै जै होय ॥ ७ ॥
जहँ अपने पिय कूँ ढूँढ़ि लेव।
अरु चरन कँवल में सुरति देव ॥ ८ ॥
कहैं चरनदास दुख दुंद जाहिँ।
जब प्रीतम सुकदेव गहैं बाँहिँ ॥ ९ ॥

शब्द २

॥ राग बसंत ॥

वह बसंत रे वह बसंत ॥ टेक ॥
कोइ बिरला पावै वह बसंत।
जा की अद्भुत लीला रँग अनंत ॥ १ ॥

जहँ झिलमिलि झिलमिलि है अपार।
जहँ मोती बरसैं निराधार ॥ २ ॥
जहँ फूलन की लागी फुहार।
जहँ अनहद बाजे बहु प्रकार ॥ ३ ॥
जहँ ताल जो बाजै बिना हाथ।
जहँ संख पखावज एक साथ ॥ ४ ॥
जहँ बिन पग घुंघुरू की टकोर।
जहँ बिन मुख मुरली घना[1] घोर[2] ॥ ५ ॥
जहँ अचरज बाजे और और।
जहँ चन्द सूर नहिँ साँझ भोर ॥ ६ ॥
जहँ अमृत दरवै कामधेन।
जहँ मान क्रोध नहिँ मोह मैन ॥ ७ ॥
जहँ पाँचो इन्द्री एक रूप।
जहँ थकित भये हैं मनुष भूप ॥ ८ ॥
सुकदेव बतावैं ऐसो खेल।
चरनदास करौ क्यों न वा सूँ मेल ॥ ९ ॥

शब्द ३

॥ होली ॥

हिल मिल होरी खेलि लई हो बालमा घर पाइया ॥ टेक ॥
पाँच सखी पचीस सहेली अनंद मंगल गाइया ॥ १ ॥
समझ बूझ का चोबा चर्चा भर्म गुलाल उड़ाइया ॥ २ ॥
दुइ गई जब इच्छा कैसी खेलन सकल बहाइया ॥ ३ ॥
चरनदास बासना तजि कै सागर लहर समाइया ॥ ४ ॥

---

(१) बहुत या बड़ा। (२) शोर।

शब्द ४

॥ होली ॥

सखी री तत मत ले संग खेलिये रस होरी हो ॥ टेक॥
निर्गुन नित निर्धार सरस रस होरी हो।
सखी री सील सिंगार सँवारी हो ॥ १ ॥
दुबिधा मान निवार सरस रस होरी हो।
सखी री बहुरि न ऐसो बार सरस रस होरी हो ॥ २ ॥
रहनी केसर घोरियो रस होरी हो।
सखी री सत गुन करि पिचकारि ले रस होरी हो ॥ ३ ॥
तम रज को भर मार सरस रस होरी हो।
सखी री गर्ब गुलाल उड़ाइये रस सोरी हो ॥ ४ ॥
मोह मटुकिया डारि सरस रस होरी हो।
सखी री झिलमिल रंग लगाइये रस होरी हो ॥ ५ ॥
चंदन चरच बिचार सरस रस होरी हो।
सखी री निस्चल सिद्धि समाइये रस होरी हो ॥ ६ ॥
रिमझिम झनक फुहार सरस रस होरी हो।
सखी री सुन्न नगर में निर्तिये रस होरी हो ॥ ७ ॥
अनहद झनक झिंगार सरस रस होरी हो।
सखी री सैन सुरत सूँ समझिये रस होरी हो ॥ ८ ॥
सोहं ब्रह्म खिलार सरस रस होरी हो।
सखी री पाँच पचीसों रल मिले रस होरी हो ॥ ९ ॥
मंगल शब्द उचार सरस रस होरी हो।
सखी री अलख पुरुष फगुवा लहो रस होरी हो ॥ १० ॥
चर्नदास रमैया रमि रह्यो रस होरी हो।
सखी री दरसो है फाग अपार सरस रस होरी हो ॥ ११ ॥

शब्द ५

॥ होली ॥

हरि पीव कूँ पाइया सखि पूरन मेरे भाग।
सुख सागर आनंद में मैं नित उठि खेलूँ फाग ॥ १ ॥
चोवा चंदन प्रीत के सखि केसर ज्ञान घसाय।
पुष्प बास सूँ जो वह भीनो ता के अंग लगाय ॥ २ ॥
बेरंगी के रंग सूँ सखि गागर लई भराय।
सुन्न महल में जाय के सखि पिय पर दइ ढरकाय ॥ ३ ॥
भरम गुलाल जब कर लियो सखि बाज़म गयो दुराय।
सतगुरु ने अंजन दियो तब सन्मुख दरसे आय ॥ ४ ॥
ताली लाई प्रेम की सखि अनहद नाद बजाय।
सर्ब मई पिय पायके हम आनंद मंगल गाय ॥ ५ ॥
रस मिल प्रीतम ह्वै गये सखि दुई गई सब भाग।
चरनदास सुकदेव दया सूँ पायो अचल सोहाग ॥ ६ ॥

शब्द ६

॥ होली ॥

प्रेम नगर के माहिँ होरी होय रही।
जब सोँ खेली हम हूँ चित दै आपन हूँ को खोय रही ॥ १ ॥
बहुतन कुल अरु लाज गँवाई रहो न कोई काम।
नाचि उठैं कभी गावन लागैं भूले तन धन धाम ॥ २ ॥
बहुतन की मति रंग रंगी है जिन को लागो प्रेम।
बहुतन को अपनी सुधि नाहीं कौन करै अस नेम ॥ ३ ॥
बहुतन की गदगद ही बानी नैनन नीर ढराय।
बहुतन की बौरापन लागो ह्वाँ की कही न जाय ॥ ४ ॥
प्रेमी की गति प्रेमी जानै जाके लागी होय।
चरनदास उस नेह नगर की सुकदेवा कहि सोय ॥ ५ ॥

सारांश निरूपन अंग

शब्द १

॥ राग मंगल ॥

जग में दो तारन कूँ नीका ।
एक तौ ध्यान गुरू का कीजे दूजे नाम धनी का ॥ १ ॥
कोटि भाँति करि निस्चै कीयो संसय रहा न कोई ।
सास्तर बेद पुरान टटोले जिन में निकसा सोई ॥ २ ॥
इन हीं के पीछे सब जानो जोग जज्ञ तप दाना ।
नौ बिधि नौधा नेम प्रेम सब भक्ति भाव अरु ज्ञाना ॥ ३ ॥
और सबै मत ऐसे मानौ अन्न बिना भुस जैसे ।
कूटत कूटत बहुतै कूटा भूख गई नहिँ तैसे ॥ ४ ॥
थोथा धर्म वही पहिचानो ता में ये दो नाहीं ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं समझि देख मन माहीं ॥ ५ ॥

॥ गुरु निरूपन ॥

शब्द २

॥ राग मंगल ॥

समझ रस कोइक[1] पावै हो ।
गुरु बिन तपन बुझै नहीं, प्यासा नर जावै हो ॥ १ ॥
बहुत मनुष ढूँढ़त फिरैं, अँधरे गुरु सेवैं हो ।
उनहूँ को सूझै नहीं औरन कहँ देवैं हो ॥ २ ॥
अँधरे को अँधरा मिलै नारी को नारी हो ।
ह्वाँ फल कैसे होयगा समझैं न अनारी हो ॥ ३ ॥
गुरु सिप दोऊ एक से एकै व्यवहारा हो ।
गये भरोसे डूबि कै वे नरक मँझारा हो ॥ ४ ॥

---

(१) कोई एक, कोई कोई ।

सुकदेव कहैं चरनदास सूँ इन का मत कूरा हो ।
ज्ञान मुक्ति जब पाइये मिलै सतगुरु पूरा हो ॥ ५ ॥

शब्द ३

॥ दोहा ॥

गुरु सेती सतगुरु बड़े, परमेसुर के रूप ।
मुक्ति छाँह पहुँचाय दें, जक्त छोड़ावैं धूप ॥

मुरशिद मेरा दिल दरियाई दिल दे अंदर खोजा ।
उस अंदर में सत्तर कावे मक्के तीसौ रोज़ा ॥ १ ॥
चौदह तवक़ औलिया जिसमें भेंट न होहि जुदाई ।
शब्द के बाँग निमाज में ठाढ़े दरशन जहाँ खोदाई ॥ २ ॥
हवा न हिर्स खुदी नहिँ खूबी अनल हक्क़ जहँ बानी ।
बे चिराग़ रौशन सब खाने तिस में तख़्त सुभानी ॥ ३ ॥
नहर बिना जहँ कँवल फुलाने अबर बिना जहँ बरसै ।
बेशऊर तंबूर सब बाजै चश्मा हो मन दरसै ॥ ४ ॥
जिस दरगाह मुसल्ला बैठा डारै चादर क़ाज़ी ।
चाय करै चीनी को बूझै सब को राखै राज़ी ॥ ५ ॥
ऐसा हो जब कामिल कहिये जब कमाल पद पावै ।
साहब मिल साहब हो दरसै ज्यौं जल बुन्द समावै ॥ ६ ॥
जा केवल दीदार किये से नादिर होय फ़क़ीर ।
मारै काल क़लन्दर कर गहि दरद लिये धरि धीर ॥ ७ ॥
ऐसा हो जब पीर कहावै मान मनी सब खोवै ।
चरनदास वह ज़मीन रौशन पायँ पसारे सोवै ॥ ८ ॥

नाम निरूपन

शब्द ४

॥ राग रामकली ॥

सतगुर अच्छर मोहिँ पढ़ायो ।
लेखनि[१] लिखा न स्याही सेती ।
ना वह कागद मध्य चढ़ायो ॥ १ ॥
ना लग मात्र न माथे बन्दी अरुन[२] पीत नहिँ काला ।
एँड़ा बेंड़ा टेड़ा नाहीं ना वह आल जँजाला ॥ २ ॥
ता कूँ देख थकी सब करनी सब ही साधन भागे ।
सिद्धैं भईं भोर के तारे मुक्ति न दीखै आगे ॥ ३ ॥
जा के पढ़े पढ़न सब छूटे आसा पोथी फारी ।
मैं तौ भया करम का हीना कहै सरसुती ठाढ़ी ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव पढ़ायो अच्छर अगम देस चटसाला[३] ।
चरनदास जब पंडित हूए धारि तिलक अरु माला ॥ ५ ॥

शब्द ५

॥ राग धनाश्री ॥

अब मैं सतगुरु सरनै आयो ॥ टेक ॥
बिन रसना बिन अच्छर बानी ऐसो हि जाप सुनायो ॥ १ ॥
काम क्रोध मद पाप जराये त्रैबिधि पाप नसायो ॥ २ ॥
नागिन पाँच मुईं संग ममता दृष्टि सूँ काल डेरायो ॥ ३ ॥
किरिया कर्म अचार भुलाना ना तीरथ मग धायो ॥ ४ ॥
समझो सहज बचन सनि गुरु के भर्म को बोझ बगायो[४] ॥ ५ ॥
ज्योँ ज्योँ जमोँ[५] गरक[६] होँ वामें वह मो माहिँ समायो ॥ ६ ॥
जग झूँठो झूँठो तन मेरो योँ आपा नहिँ पायो ॥ ७ ॥

---

(१) कलम । (२) लाल । (३) पाठशाला, मकतब । (४) बगदाया, छिटकाया ।
(५) ध्यान लगाऊँ । (६) डूब जाऊँ ।

वा कूँ जपै जन्म सोइ जोते सो मैं सुद्ध बतायो ॥ ८ ॥
चरनदास सुकदेव दया यौं सागर लहरि समायो ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

गगन मंडल में जाप कर, जित है दसवाँ द्वार ।
चरनदास यों कहत हैं, सो पहुँचे हरि वार ॥

मिश्रित

शब्द १

॥ राग भैरों ॥

गुरु बिन मेरे और न कोय, जग के नाते सब दिये खोय ॥१॥
गुरु ही मात पिता अरु बीर, गुरु हो सम्पति जीव सरीर ॥२॥
गुरु ही जाति बरन कुल गोत, जहाँ तहाँ गुरु संगी होत ॥३॥
गुरु ही तीरथ बर्त हमार, दीन्हे और धरम सब डार ॥४॥
गुरु ही नाम जपौं दिन रैन, गुरु कूँ ध्यान परम सुख दैन ॥५॥
गुरु के चरन कमल कर बास, और न राखूँ कोई आस ॥६॥
जो कुछ चाहैं गुरु ही करैं, भावै छाँह धूप में धरैं ॥७॥
आदि पुरुष गुरु ही को जानूँ, गुरु ही मुक्ती रूप पिछानूँ ॥८॥
चरनदास के गुरु सुकदेव, और न दूजा लागै लेव[1] ॥९॥

शब्द २

॥ आरती राग भैरों ॥

मंगल आरति कीजै प्रात, सकल अविद्या घट गइ रात ॥१॥
सूरज ज्ञान भयो उजियारा, मिटि गये औगुन कुबुधि बिकारा ॥२॥
मन के रोग सोग सब नासे, सुमति नीर सुभ जलज[2] प्रकासे ॥३॥
भय अरु भर्म नहीं ठहराई, दुबिधा गई एकता आई ॥४॥
जाति बरन कुल सूझै नीके, सब संदेह गये अब जी के ॥५॥
घट घट दरसै दीनदयाला, रोम रोम सब हो गइ माला ॥६॥

---

(१) लेवा, कीचड़ । (२) कमल ।

दृष्टि न आवैं दुख जग जाला, काग पलटि गति भये मराला[1] ॥७॥
अनहद बाजे बाजन लागे, चोर नगरिया तजि तजि भागे ॥८॥
गुरु सुकदेव की फिरी दोहाई, चरनदास अंतर लौ लाई ॥९॥

शब्द ३

॥ राग सोरठ ॥

योँ कहैं हरि जी दया निधान, संत हमारे जीवन प्रान ॥१॥
संत चलैं जहँ संग हिं जावँ, संत नियो सो भोजन खावँ ॥२॥
संत सुलावैं जित रहुँ सोय, संत बिना मेरे और न कोय ॥३॥
संत हमारे माई बाप, संतहि को मन राखूँ जाप ॥४॥
संत को ध्यान धरौं दिन रैन, संत बिना मोहिं परै न चैन ॥५॥
संत हमारी देही जान, संतहिं की राखूँ पहिचान ॥६॥
संत की सकल बलैयाँ लेवँ, संत कूँ अपनो सर्बस देवँ ॥७॥
संतहि हेत धरूँ औतार, रच्छा कारन करूँ न बार ॥८॥
सुख देऊँ दुख सब निर्वार, चरनदास मेरो परिवार ॥९॥

शब्द ४

॥ राग सोरठ ॥

वह पुरुषोत्तम मेरा यार, नेह लगी टूटै नहिँ तार ॥१॥
तीरथ जाऊँ न बर्त करूँ, चरन कमल को ध्यान धरूँ ॥२॥
प्रान पियारे मेरेहिं पास, बन बन माहिँ न फिरूँ उदास ॥३॥
पढ़ूँ न गीता वेद पुरान, एकहिँ सुमिरूँ श्रीभगवान ॥४॥
औरन को नहिँ नाऊँ सीस, हरि ही हरि हैं बिस्वे बीस ॥५॥
काहू की नहिँ राखूँ आस, तृस्ना काटि दई है फाँस ॥६॥
उद्यम करूँ न राखूँ दाम, सहजहिँ ह्वै रहैं पूरन काम ॥७॥
सिद्ध मुक्ति फल चाहौं नाहिँ, नितहिँ रहूँ हरि संतन माहिँ ॥८॥
गुरु सुकदेव यही मोहिँ दीन, चरनदास आनंद लव लीन ॥९॥

---

(१) हंस।

शब्द ५

॥ राग केदारा ॥

अरे मन करो ऐसा जाप ।
कटें संकट कोटि तेरे मिटैं सगरे पाप ॥ १ ॥
चेत चेतन खोज करि लै देख आपा आप ।
काग सूँ जब हंस होवै नाम के परताप ॥ २ ॥
ध्यान आतम सुरति राखौ छुटैं त्रैगुन ताप ।
सुरति माला सुमिरि हिरदय छाँड़ि सकल संताप ॥ ३ ॥
परा भक्ति अगाध अद्भुत बिमल अरु निष्काम ।
चरनदास सुकदेव कहिया बसे निज पुर धाम ॥ ४ ॥

शब्द ६

॥ राग विलावल ॥

अब तू सुमिरन कर मन मेरे ।
अगले पिछले अब के कीये पाप कटैं सब तेरे ॥ १ ॥
जम के दंड दहन पावक की चौरासी दुख प्रेरे ।
भर्म कर्म सबहीं कटि जैहैं जक्त व्याधि उरझेरे ॥ २ ॥
पैहै भक्ति मुक्ति गति आनंद अमरहिँ लोक बसेरो ।
जनमै मरै न जोनी आवै या जग करै न फेरो ॥ ३ ॥
सुमिरन साधन माहिं सिरोमनि जो सुमिरन करि जानै ।
काम क्रोध मद पाप जरावै हरि बिन और न मानै ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव बताय दियो है बिन जिभ्या करि लीजै ।
चरनदास कहैं घेरि घेरि कर अर्ध उर्ध मन दीजै ॥ ५ ॥

शब्द ७

॥ राग नट व बिलावल ॥

जो नर हरि धन सूँ चित लावै ।
जैसे तैसे टोटा नाहीं लाभ सवाया पावै ॥ १ ॥

मन करि कोठी नावँ खजानो भक्ति दुकान लगावै ।
पूरा सतगुरु साक्षी करिकै संगति बनिज चलावै ॥ २ ॥
हुंडी ध्यान सुरति ले पहुँचै प्रेम नगर के माहीं ।
सीधा साहूकारा साँचा हेर फेर कछु नाहीं ॥ ३ ॥
जित सौदागर सबही सुखिया गुरु सुकदेव बसाये ।
चरनहिंदास बिलमि रहे ह्वाँई जूनी[1] पंथ न आये ॥ ४ ॥

शब्द ८

॥ राग बिहागरा ॥

भइ हूँ प्रेम में चूर हो मोहिँ दरसन दीजै ।
हूँ तो दासी तिहारी मोहन बेगि खबरिया लीजै ॥ १ ।
ज्ञान ध्यान अरु सुमिरन तेरो तुव चरनन चित राखूँ ।
तेरोहि नाम जपूँ दिन राती तुव बिन और न भाखूँ ॥ २ ॥
तन व्याकुल जिय रूँधोहि आवत परी प्रीत गल फाँसी ।
तुम तो निठुर कठोर महा पिय तुमको आवै हाँसी ॥ ३ ॥
बिरह अगिन नख सिख सूँ लागी मनै कल्पना भारी ।
गिरोहि[2] प्रीत तन संभ्रम[3] नाहीं रहत भवन में डारी ॥ ४ ॥
की विष खाय तजों यह काया की तुम्हरे संग रहसूँ ।
चरनदास सुकदेव बिछोहा तेरी सौं[4] नहिं सहसूँ[5] ॥ ५ ॥

शब्द ९

॥ राग मगल ॥

परम सखी सोइ साध जो आपा ना थपै ।
मन के दोष मिटाय नाम निर्गुन जपै ॥ १ ॥
पर निन्दा पर नारि द्रव्य नाहीं हरै ।
जिन चालन हरि दूर बीच अंतर परै ॥ २ ॥
छिन नहिँ बिसरै राम ताहि निकटै तकै ।
हरि चरचा बिन और वाद नाहीं बकै ॥ ३ ॥

(१) पुनर्जन्म । (२) ग्रसी । (३) सम्हाल । (४) कसम । (५) सह सकता हूँ ।

झूँठ कपट छल भगल ये सकल निवारिये ।
जत सत सील संतोष छिमा हिय धारिये ॥ ४ ॥
काम क्रोध मद लोभ बिडारन कीजिये ।
मोह ममता अभिमान अक्कस तजि दीजिये ॥ ५ ॥
सब जीवन निर्बैर त्याग वैराग लै ।
तब निर्भय ह्वै संत भाँति काहू न भै[1] ॥ ६ ॥
काग करम सब छोंड़ि होय हंसा गती ।
तृस्ना आस जलाय सोई साधू मती ॥ ७ ॥
जग सूँ रहै उदास भोग चित ना धरै ।
जब रीझै करतार दास अपनो करै ॥ ८ ॥
कहैं गुरू सुकदेव जो ऐसा हूजिये ।
चरनहिं दास बिचारि प्रेम में भीजिये ॥ ६ ॥

शब्द १०

॥ राग हिंडोला ॥

झूलत कोइ कोइ संत लगन हिंडोलने ॥ टेक ॥
पौन उमाह उछाह धरती सोच सावन मास ।
लाज के जहँ उड़त बगुले मोर हैं जग हांस ॥ १ ॥
हरष सोक दोउ खंभ रोपे सुरत डोरी लाय ।
बिरह पटरी बैठि सजनी उमंग आवै जाय ॥ २ ॥
सकल बिकल तहँ देत झोंके बिपत गावन हार ।
सखी बहुतक रंग राती रँगी पाँचो नार ॥ ३ ॥
नैन बादल उमंगि बरसैं दामिनी दमकात ।
बुद्धि को ठहराव नाहीं नेह की नहिं जात ॥ ४ ॥
सुकदेव कहैं कोइ बली झूलै सीस देत अकोर[2] ।
चरनदासा भये बौरे जाति बरन कुल छोर ॥ ५ ॥

---

(१) भय । (२) भेंट, घूस ।

शब्द ११

॥ राग बिलावल ॥

साँचा सुमिरन कीजिये जा में मीन न मेख।
ज्यों आगे साधुन कियो बानी में देख ॥ १ ॥
टेक गहो दृढ़ भक्ति की नौधा हिय धारि।
संतन की सेवा करो कुल कानि निवारि ॥ २ ॥
जा सूँ प्रेमा ऊपजै जब हरि दरसायँ।
आगे पीछे ही फिरैं प्रभु छोड़ि न जायँ ॥ ३ ॥
चारि मुक्ति बाँदी भवै सिधि चरनन माहिँ।
तीरथ सब आसा करैं अघ देख नसाहिँ ॥ ४ ॥
कहैं गुरू सुकदेव जी चरनदास गुलाम।
ऐसी साधन धारिये रहिये निस्काम ॥ ५ ॥

शब्द १२

॥ राग धनाश्री ॥

गुरु गम यहि बिधि जोग कमायो।
आसन अचल मेर कियो सीधो कसि बंध मूल लगायो ॥ १
संजम साधि कला बस कीन्ही मन पवना घर आयो।
नौ दरवाजे पट दै राखे अर्धं उर्ध मिलायो ॥ २
नाभि तले पैड़ो करि पैठे सक्ति पाताल गई है।
काँप्यौ सेस कमठ अकुलायो सायर थाह दई है ॥ ३
उलटि चले मठ फोरि इकीसौ गये अभय पद माहीं।
अति उँजियारो अद्भुत लीला कहन सुनन गम नाहीं ॥ ४
जित भये लीन सबै सुधि बिसरी छुटी जगत की व्याधा।
चरनदास सुकदेव दया सूँ लागी सुन्न समाधा ॥ ५ ।

शब्द १३

॥ राग धनाश्री ॥

ऐसी जोग जुक्ति गति भारी ।
मूलहिँ बंध लगाय जुक्ति सूँ मूँदि दई नव नारी ॥ १ ॥
आसन पद्म महा दृढ़ कीन्हो हिरदय चिबुक[1] लगाई ।
चन्द सूर दोउ सम करि राखे निरति सुरति घर आई ॥ २ ॥
ऊपर खैंचि अपान सहज में सहजै प्रान मिलाई ।
पवन फिरी पच्छिम कूँ दौरी मेरुहि मेरु चलाई ॥ ३ ॥
ऐसहिँ लोक अमर पद पहुँचे सूरज कोटि उजारी ।
सेत सिंहासन सतगुरु परसे करि दरसन बलिहारी ॥ ४ ॥
आपा बिसरि प्रेम सुख पायो उनमुन लागी तारी ।
चरनदास सुकदेव दया सूँ चरन दास छुटी बारी[2] ॥ ५ ॥

शब्द १४

॥ राग मलार ॥

बिथा मोरी जानत हो अकि[3] नाहीं ।
नख सिख पावक बिरह लगाई बिछुरन दुख मन माहीं ॥ १ ॥
दिन नहिं चैन नींद नहिं निसकूँ चिस्चल बुधि नहिं मेरो ।
कासूँ कहूँ कोउ हितु न हमारो लभ लहरि हरि तेरी ॥ २ ॥
तन भयो छीन दीन भये नैना अजहूँ सुधि नहिँ पाई ।
छतियाँ दरकत करक हिये में प्रीत महा दुखदाई ॥ ३ ॥
जल बिन मीन पिया बिन बिरहिन इन धीरज कहु कैसी ।
पच्छी जरै दव[4] लागी बन में मेरी गति भई ऐसी ॥ ४ ॥
तलफत हूँ जिय निकसत नाहीं तन में अति अकुलाई ।
चरनदास सुकदेवहिँ बिनवै[5] दरसन द्यो सुखदाई ॥ ५ ॥

---

(१) ठुड्डी। (२) चरन के दास का आवागवन छूटा। (३) याकि। (४) आग। (५) विनती करता है।

शब्द १५

॥ राग सीठना ॥

पर आसा है दुखदाई ॥ टेक ॥
जिन धीरज सो पति रसिया छाँड़ो ।
बाँको मोह यार कियो गाढ़ो, क्रोध सूँ प्रीति लगाई ॥ १ ॥
जिन जत सत देवर सूँ मुख मोड़ा ।
दया बहिन सूँ नाता तोड़ा, सुमति सौच[1] बिसराई ॥ २ ॥
जो धर्म पिता के घर सूँ छूटी ।
छिमा माय सूँ यों हीं रूठी, कुमति परोसिन पाई ॥ ३ ॥
संतोष चचा को कहा न माना ।
चची दीनता सूँ रिसि ठाना, माया मद बौराई ॥ ४ ॥
चरनदास जब निज पति पावै ।
श्री सुकदेव सरन सो आवै, सील सिंगार बनाई ॥ ५ ॥

शब्द १६

॥ राग बिलावल ॥

करनी की गति और है कथनी की औरे ।
बिन करनी कथनी कथैं बक बादी बौरे ॥ १ ॥
करनी बिन कथनी इसी[2] ज्यों ससि बिन रजनी ।
बिन सस्तर[3] ज्यों सूरमा भूषन बिन सजनी[4] ॥ २ ॥
ज्यों पंडित कथि कथि भले बैराग सुनावैं ।
आप कुटुंब के फँद पड़े नाहीं सुरझावैं ॥ ३ ॥
बाँझ झुलावै पालना बालक नहिं माहीं ।
वस्तु बिहीना जानिये जहँ करनी नाहीं ॥ ४ ॥
बहु डिंभी करनी बिना कथि कथि करि मूए ।
संतों कथि करनी करी हरि के सम हूए ॥ ५ ॥

---

(१) सफाई । (२) ऐसी । (३) हथियार । (४) स्त्री ।

कहैं गुरू सुकदेव जी चरनदास बिचारौ ।
करनी रहनी दृढ़ गहौ थोथी कथनी डारौ ॥ ६ ॥

शब्द १७

॥ राग बिलावल ॥

माला फेरे कहा भयो ॥ टेक ॥
अंतर के मन को नहिं फेरा पाप करत सब जन्म गयो ॥१॥
पर निन्दा पर नारि न भूलो खोट कपट की ओर नयो[1] ॥२॥
काम क्रोध मद लोभ न खोये ह्वै रह्यो मूरख मोह मयो ॥३॥
दुनिया साँच समझ घर कीन्हो धन जोरन को परन लयो ॥४॥
दया धर्म दोउ मारग छाँड़े मँगतन को नहिं दान दयो ॥५॥
गुरु सूँ झूँठ भगल साधन सूँ हरि सूँ नाहीं नेह जयो[2] ॥६॥
चरनदास सुखदेव कहत हैं कैसे कहियो मुक्ति हयो[3] ॥७॥

शब्द १८

॥ राग सोरठ ॥

अवधू ऐसी मदिरा पीजै ।
बैठि गुफा में यह जग बिसरै चंद सूर सम कीजै ॥ १ ॥
जहाँ कुलाल चढ़ाई भाठी ब्रह्म ज्वाल परजारी ।
भरि भरि प्याला देत कुलाली बाढ़ै भक्ति खुमारी ॥ २ ॥
माता[4] ह्वै करि ज्ञान खड़ग लै काम क्रोध कूँ मारै ।
घूमत रहै गहै मन चंचल दुबिधा सकल बिडारै ॥ ३ ॥
जो चाखै यह प्रेम सुधारस निज पुर पहुँचै सोई ।
अमर होय अमरा पद पावै आवा गवन न होई ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव किया मतवारा तीन लोक तृन बूझा ।
चरनदास रनजीत भये जब आनंद आनंद सूझा ॥ ५ ॥

---

(१) ——

शब्द १६

॥ राग बिहागरा ॥

साधो निंदक मित्र हमारा ।
निंदक कूँ निकटे ही राखौं होन न देउँ नियारा ॥ १
पाछे निंदा करि अघ धोवै सुनि मन मिटै बिकारा ।
जैसे सोना तापि अगिन में निरमल करै सोनारा ॥ २
घन अहरन कसि[1] हीरा निबटै[2] कीमत लच्छ हजारा ।
ऐसे जाँचत दुष्ट संत कूँ करन जगत उजियारा ॥ ३
जोग जज्ञ जप पाप कटन हितु करै सकल संसारा ।
बिन करनी मम कर्म कठिन सब मेटै निंदक प्यारा ॥ ४
सुखी रहो निंदक जग माहीं रोग न हो तन सारा ।
हमरी निंदा करने वाला उतरै भव निधि पारा ॥ ५
निदक के चरनों की अस्तुति भाखौं बारम्बारा ।
चरनदास कहैं सुनियो साधो निंदक साधक भारा ॥ ६

शब्द २०

॥ राग सोरठा ॥

साधो होनहार की बात ।
होत सोई जो होनहार है का पै मेटी जात ॥ १ ॥
कोटि सयानप बहु बिधि कीन्हे बहुत तर्क कुसिलात ।
होनहार ने उलटी कीन्ही जल में आग लगात ॥ २ ॥
जो कुछ होय होतबता[3] भोंडी जैसी उपजै बुद्धि ।
होनहार हिरदै मुख बोलै बिसरि जाय सब सुद्धि ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव दया सूँ होनी धारि लई मन माहिं ।
चरनदास सोचे दुख उपजै समझे सूँ दुख जाहिं ॥ ४ ॥

---

(१) पीट करके । (२) निर्मल होय । (३) होनहार ।

शब्द २१

॥ राग परज ॥

जिन्हें हरि भक्ति पियारी हो ।
मात पिता सहजै छुटैं छुटैं सुत अरु नारी हो ॥ १ ॥
लोक भोग फीके लगैं सम अस्तुति गारी हो ।
हानि लाभ नहिँ चाहिये सब आसा हारी हो ॥ २ ॥
जग सूँ मुख मोरे रहैं करैं ध्यान मुरारी हो ।
जित मनुवाँ लागो रहै भइ घट उँजियारी हो ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव बताइया प्रेमी गति भारी हो ।
चरनदास चारौ बेद सूँ औरै कछु न्यारी हो ॥ ४ ॥

शब्द २२

॥ राग परज ॥

गुरु हमरे प्रेम पियायो हो ।
ता दिन तें पलटो भयो कुल गोत नसायो हो ॥ १ ॥
अमल चढ़ो गगनै लगो अनहद मन छायो हो ।
तेज पुंज की सेज पै प्रीतम गल लायो हो ॥ २ ॥
गये दिवाने देसड़े आनंद दरसायो हो ।
सब किरिया सहजै छुटी तप नेम भुलायो हो ॥ ३ ॥
त्रैगुन तें ऊपर रहूँ सुकदेव बसायो हो ।
चरनदास दिन रैन नहिँ तुरिया पद पायो हो ॥ ४ ॥

शब्द २३

॥ राग सोरठ ॥

भाई रे समझ जग व्योहार ।
जब ताईं तेरे धन पराक्रम करैं सबहीं प्यार ॥ १ ॥
अपने सुख कूँ सबहिँ चाहैं मित्र सुत अरु नार ।
इन्हीं तौ अप[1] बस कियो है मोह बेड़ी डारि ॥ २ ॥

---

(१) अपने ।

सबन तो कूँ भय दिखायो लाज लकुटी[1] मार।
बाजीगर के बाँदरा ज्यों फिरत घर घर द्वार ॥ ३ ॥
जबै तो कूँ बिपति आवै जरा कोर बिकार।
तबै तो सूँ लाज मानें करें ना तेरि सार ॥ ४ ॥
इनकी संगति सदा दुख है समझ मूढ़ गंवार।
हरि प्रीतम कूँ सुमिरि ले कहैं चरनदास पुकार ॥ ५ ॥

शब्द २४

॥ राग बिहागरा ॥

ये सब निज स्वारथ के गरजी।
जग में हेत न कर काहू सूँ अपने मन को बरजी[2] ॥ १ ॥
रोपैं फंद घात बहु डारें इन तें रहु डरता जी।
हिरदे कपट बाहर मिठ बोलैं यह छल हैगो कहा जी ॥ २ ॥
दुख सुख दर्द दया नहिँ बूझैं इनसे छुटावो हरि जी।
सौगंद खाय झूँठ बहु बोलैं भौसागर कस तरि जी ॥ ३ ॥
बैरी मित्र सबै चुनि देखे दिल के महरम[3] कहँ जी।
इन को दोष कहा कहा दीजै यह कलजुग की झर जी ॥ ४ ॥
दुनिया बगल कुटिल बहु खोँटी देखि छाती मेरी लरजी[4]।
चरनदास इन कूँ तजि दीजै चल बस अपने घर जी ॥ ५ ॥

शब्द २५

॥ राग आसावरी ॥

साधो राम भजे ते सुखिया।
राजा परजा नेमी दाता सबहीं देखे दुखिया ॥ १ ॥
जो कोई धनवंत जगत में राखत लाख हजारा।
उनकूँ तो संसय है निस दिन घटत बढ़त व्यौहारा ॥ २ ॥
जिनके बहु सुत नाती कहिये और कुटुंब परिवारा।
वे तो जीवन मरन के काजै सहत रहैं दुख भारा ॥ ३ ॥

(१) लाठी। (२) मना करना। (३) भेदी। (४) काँपी।

नेमी नेम करत दुख पावैं कर अस्नान सवेरा।
दाता कूँ देवे का दुख है जब मँगतों ने घेरा ॥ ४ ॥
चारि बरन में कोउ न देखो जाकूँ चिंता नाहीं।
हरि की भक्ति बिना सब दुख है समझ देख मन माहीं ॥ ५ ॥
सत संगति अरु हरि सुमिरन करि सुकदेवा गुरु कहिया।
चरनदास बिपता सब तजि के आनँद में नित रहिया ॥ ६ ॥

शब्द २६

॥ राग सोरठ ॥

अब घर पाया हो मोहन प्यारा ॥ टेक ॥
लखो अचानक अज[१] अबिनासी उघरि गये दृग तारा ॥ १ ॥
झूमि रह्यो मेरे आँगन में टरत नहीं कहुँ टारा ॥ २ ॥
रोम रोम हिय माहीं देखो होत नहीं छिन न्यारा ॥ ३ ॥
भयो अचरज चरनदास न पैये खोज कियो बहु बारा ॥ ४ ॥

शब्द २७

॥ राग आसावरी ॥

हे मन आतम पूजा कीजै।
जितनी पूजा जग के माहीं सबहुन को फल लीजै ॥ १ ॥
जो जो देहीं ठाकुरद्वारे तिन में आप बिराजै।
देवल में देवत है परगट आछी बिधि सूँ राजै ॥ २ ॥
त्रैगुन भवन सँभारि पूजिये अनरस होन न पावै।
जैसे कूँ तैसा ही परसौ प्रेम अधिक उपजावै ॥ ३ ॥
और देवता दृष्टि न आवै धोखे कूँ सिर नावै।
आदि सनातन रूप सदा हीं मूरख ताहि न ध्यावै ॥ ४ ॥
घट घट सूझै कोइ इक बूझै गुरु सुकदेव बतावैं।
चरनदास यह सेवन कीन्हे जिवन मुक्ति फल पावैं ॥ ५ ॥

---

(१) अजर।

शब्द २८

॥ राग हेली ॥

समझि सँभारो रामजी हेली और न मीता कोय।
जीवत की रच्छा करैं मुए मुक्ति करैं तोय ॥ १ ॥
अरु सब स्वारथ के सगे री हेली अंत न कोई साथ।
सुख में सब ही रल मिलें दुख में सुनें न बात ॥ २ ॥
छल करि मन की बूझ लें री हेली पाछे डारैं घात।
तिन कूँ तू अपनो कहै सो दोषी ह्वै जात ॥ ३ ॥
भेद न अपनो दीजिये री हेली कोऊ कैसो होय।
दयहिर की हिरदय रहै हरि हीं जानै सोय ॥ ४ ॥
कै गुरु अपनो जानिये री हेली कै सत संगति बास।
गुरु सुकदेव बतावईं देख चरन हीं दास ॥ ५ ॥

शब्द २९

॥ राग बिलावल ॥

अरे नर जन्म पदारथ खोया रे ॥ टेक ॥
बीती अवधि काल जब आया सीस पकरि कै रोया रे ॥ १ ॥
अब क्या होय कहा बनि आवै माहिँ अबिद्या सोया रे ॥ २ ॥
साधु संग गुरु सेवन चीन्ही तत्व ज्ञान नहिँ जोया[1] रे ॥ ३ ॥
आगे से हरि भक्ति न कीन्ही रसना राम न जोया रे ॥ ४ ॥
चौरासी जम दंड न छूटै आवा गवन का दोया[2] रे ॥ ५ ॥
जो कुछ किया सोई अब पावो वहीलनौ[3] जो बोया रे ॥ ६ ॥
साहव साँचा न्याव चुकावै ज्यों का त्यों ही होया रे ॥ ७ ॥
कहूँ पुकारे सब सुनि लीजो चेति जाव नर लोया रे ॥ ८ ॥
कहैं सुकदेव चरन हीं दासा यह मैदान यह गोया[4] रे ॥ ९ ॥

---

(१) ढूँढ़ा। (२) ढोड़ारी, डोरा। (३) काटो। (४) गेंद।

शब्द ३०

॥ राग आसावरी ॥

जब सूँ मन चंचल घर आया ।
निर्मल भया मैल गये सगरे तीरथ ध्यान जो न्हाया ॥ १ ॥
निर्बासी ह्वै आनंद पाये या जग सूँ मुख मोड़ा ।
पाँचों भईं सहज बस मेरे जब इनका रस छोड़ा ॥ २ ॥
भय सब छूटे अब को लूटै दूजी आस न कोई ।
सिमिटि सिमिटि रहा अपने माहीं सकल बिकल नहिँ होई ॥ ३ ॥
निज मन हूआ मिटि गा दूआ को बैरी को मीता ।
बंध मुक्ति का संसय नाहीं जन्म मरन की चीता[1] ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव भेव मोहिँ दोनो जब सूँ यह गति साधी ।
चरनदास सूँ ठाकुर हूए बुटि[2] गये बाद बिबादी ॥ ५ ॥

शब्द ३१

॥ राग बिहागरा व बिलावल ॥

अब हम ज्ञान गुरू से पाया ।
दुबिधा खोय एकता दरसी निस्चल ह्वै घर आया ॥ १ ॥
हिरदा सुद्ध हुआ बुधि निर्मल चाह रही नहिँ कोई ।
ना कुछ सुनूँ न परसूँ बूझूँ उलटि पलटि सब खोई ॥ २ ॥
समझ भई जब आनंद पाये आतम आतम सूझा ।
सूधा भया सकल मन मेरा नेक न कहूँ अरूझा ॥ ३ ॥
मैं सबहुन में सब मोहूँ में साँच यही करि जाना ।
यही वही है वही यही है दूजा भाव मिटाना ॥ ४ ॥
सुकदेवा ने सब सुख दीन्हे तिरपत होय अघायो ।
चरनदास निकसा नहिँ रंचक परमातम दरसायो[3] ॥ ५ ॥

---

(१) चिन्ता । (२) लुट गये । (३) चरनदास का आपा नहीं रहा बरन परमात्मा

शब्द ३२

॥ राग मंगल व बिलावल ॥

कर्म करि निष्कर्म होवै, फेरि कर्म न कीजिये।
भूलि कै कोइ कर्म साधै, उलटि कर्म न दीजिये ॥ १ ॥
कर्म त्यागै जगै आतम, यह निस्चय करि जानिये।
जब अभै पद सुलभ पावै, साँच हिय में आनिये ॥ २ ॥
साँच हिय में राखि अवधू, नाम निर्गुन नित जपौ।
अगिन इन्द्री कर्म लकड़ी, पंच अग्नी अस तपौ ॥ ३ ॥
जैसे टूट गहनो खोज मेटै, होय सोना अति सुखी।
ऐसे जोग भक्ति बैराग सेती, कर्म काटैं गुरुमुखी ॥ ४ ॥
जासूँ मिटै आपा आप सहजै, ब्रह्म बिद्या ठानिये।
गुरु सुकदेवा जुक्ति भाखैं, चरनदास पिछानिये ॥ ५ ॥

शब्द ३३

॥ राग आसावरी ॥

हम तो आतम पूजा धारी।
समझि समझि कर निस्चय कीन्ही, और सबन पर भारी ॥ १ ॥
और देवल जहँ धुँधली पूजा, देवत दृष्टि न आवै।
हमरा देवत परगट दीखै, बोलै चालै खावै ॥ २ ॥
जित देखौं तित ठाकुरद्वारे, करौं जहाँ नित सेवा।
पूजा की विधि नीके जानौं, जासूँ परसन देवा ॥ ३ ॥
करि सन्मान अस्नान कराऊँ, चन्दन नेह लगाऊँ।
मीठे वचन पुष्प सोइ जानो, है करि दीन चढ़ाऊँ ॥ ४ ॥
परसन करि करि दरसन पाऊँ, बार बार बलि जाऊँ।
चरनदास सुकदेव बतावैं, आठ पहर सुख पाऊँ ॥ ५ ॥

शब्द ३४

॥ राग सीठना ॥

तेरी छिन छिन छीजत आयु, समझ अजहूँ भाई ॥ १ ॥
दिन दो का जीवन जानि, छाँड़ दे गुमराई[1] ॥ २ ॥
तुन मूरख नर अज्ञान, चेत करु कोउ न रही ॥ ३ ॥
कह फूला फिरत गँवार, जगत झूँठे माहीं ॥ ४ ॥
कियौ काम क्रोध सूँ नेह, गही है अकड़ाई ॥ ५ ॥
मतवारा माया माहिँ, करत है कुटिलाई ॥ ६ ॥
तेरो संगी कोई नाहिँ, गहै जब जम बाहीं ॥ ७ ॥
सुकदेव चितावैं तोहिँ, त्याग रे मचलाई ॥ ८ ॥
चरनदास कहैं भजु राम, यही है सुखदाई ॥ ९ ॥

शब्द ३५

॥ सवैया ॥

आदिहुँ आनंद, अन्तहुँ आनंद,
मध्यहुँ आनंद, ऐसे हिँ जानौ ।
बँधहुँ आनंद, मुक्तिहुँ आनंद,
आनंद ज्ञान, अज्ञान पिछानौ ॥
लेटेहुँ आनंद, बैठेहुँ आनंद,
डोलत आनंद, आनंद आनौ ।
चरनदास बिचारि, सबै कुछ आनंद,
आनंद छाँड़ि कै, दुक्ख न ठानौ ॥

शब्द ३६

कवित्त

मंदिर क्यों त्यागै अरु भागै क्यों गिरिवर कूँ,
हरि जी कूँ दूर जानि कलपै क्यों बावरे ।
सब साधन बतायो अरु चारि वेद गायौ,
आपन कूँ आप देखि अन्तर लौ लाव रे ॥

1. भूल, भटक ।

ब्रह्म ज्ञान हिये धरौ बोलते को खोज करौ,
माया अज्ञान हरौ, आपा बिसराव रे।
जैहैं जब आप धाप कहा पुन्न कहा पाप,
कहैं चरनदास तू निस्चल घर आव रे॥

शब्द ३७

॥ भोर की धुन राग भैरव ॥

आरति रमता राम की कीजै।
अंतर्ध्यान निरखि सुख लीजै॥ १॥
चेतन चौकी सत कूँ आसन।
मगन रूप तकिया धरि दीजै॥ २॥
सोहं थाल खैंचि मन धरिया।
सुरत निरत दोउ बाती बरिया॥ ३॥
जोग जुगति सूँ आरति साजी।
अनहद घंट आप सूँ बाजी॥ ४॥
सुमति साँझ की बेरिया आई।
पाँच पचीस मिलि आरति गाई॥ ५॥
चरनदास सुकदेव कूँ चेरो।
घट घट दरसै साहब मेरो॥ ६॥

शब्द ३८

॥ भोर की धुन राग भैरव ॥

गगन मंडल में आरति कीजै।
उत्तम साज सकल साजि लीजै॥ १॥
सुखमन अमृत कुंभ[1] धरावै।
मनसा मालिनि फूल चढ़ावै॥ २॥

---

(१) घड़ा।

घीव अखंडा सोहं बाती।
त्रिकुटी ज्योति जलै दिन राती ॥ ३ ॥
पवन साधना थाल करीजै।
ता में चौमुख मन धर लीजै ॥ ४ ॥
रबि ससि हाथ गहौ तिहि माहीं।
खिन दहिने खिन बाँये लाई ॥ ५ ॥
सहस कँवल सिंहासन राजै।
अनहद झाँझरि नित हीं बाजै ॥ ६ ॥
यहि बिधि आरति साँची सेवा।
परम पुरुष देवन को देवा ॥ ७ ॥
चरनदास सुकदेव बतावै।
ऐसी आरति पार लगावै ॥ ८ ॥

शब्द ३९
॥ राग काफी ॥

कोइ दिन जीवै तौ कर गुजरान।
कहर गरूरी छाँड़ि दिवाने, तजो अकस की बान ॥ १ ॥
चुगली चोरी अरु निन्दा लै, झूठ कपट अरु कान।
इनकूँ डारि[१] गहे जत सत कूँ, सोई अधिक सयान ॥ २ ॥
हरि हरि सुमिरौ छिन नहिँ बिसरौ, गुरु सेवा मन ठानि।
साधुन की संगति कर निस दिन, आवे ना कछु हानि ॥ ३ ॥
मुडौ कुमारग चलौ सुमारग, पावौ निज पुर बास।
गुरु सुकदेव चेतावैं तोकूँ, समुझ चरनहीं दास ॥ ४ ॥

शब्द ४०
॥ राग रामकली ॥

फिरि फिरि मूरख जन्म गँवायो।
हरि की भक्ति साधु की संगति, गुरु के चरनन में नहिं आयो ॥१॥

(१) फेंक कर।

धन के जोरन को हद कीन्हो, महल करन व्रत धारो ।
टेक पकड़ करि नारी सेई, सिर पर बोझ लियो अति भारो ॥ २ ॥
ह्वै हैं दुख नाना बिधि केरो, तन मन रोग बढ़ायो ।
जीवत मरत नहीं सुख पैहो, आवा गवन कूँ बीज जगायो ॥ ३ ॥
भरमि भरमि चौरासी आयो, मनुषा देही पाई ।
या तन की कछु सार न जानी, फिर आगे चौरासी आई ॥ ४ ॥
आँख उघारि समुझ मन माही, हिरदय करौ बिचारा ।
ऐसा जन्म बहुरि कब पैहो, बिरथा खोवौ जग ब्योहारा ॥ ५ ॥
जानौगे जग छाँड़ि चलोगे, कोई न संग तुम्हारे ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, याद करोगे बचन हमारे ॥ ६ ॥

शब्द ४१
॥ राग कान्हरा ॥

हरि बिन कौन तुम्हारो मीता ।
कुटुंब संघाती स्वारथ लागे, तेरी काहू कूँ नहिँ चीता ॥१॥
तैं प्रभु ओरी सूँ मुख मोड़ा, झूँठे लोगन सूँ हित कीता ।
अरु तैं अपनी आँखों देखा, कई बार दुख सुख हो बीता ॥२॥
सम्पति में सबहीं घिरि आवैं, बिपति परे अधिको दुख दीता ।
मूठी बाँधि जनम नर लायो, हाथ पसारि चलैगो रीता ॥३॥
धरि धरि स्वांग फिरै तिन कारन, कपि ज्यौं नाचत ताता थीता ।
मुए न संगी होहिँ तिहारे, बाँधि जलावैं देह पलीता ॥४॥
गुरु सेवा सतसंग न कीन्हीं, कनक कामिनी सोँ करि प्रीता ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, मरत मरत हरि नाम न लीता ॥५॥

शब्द ४२
॥ राग सोरठ ॥

कछु मन तुम सुधि राखौ वा दिन की ।
जा दिन तेरी देह छुटैगी, ठौर बसौगे बन की ॥ १ ॥

जिन के संग बहुत सुख कीन्हे, मुख ढकि ह्वै हैं न्यारे।
जम को त्रास होय बहु भाँती, कौन छुटावनहारे॥ २॥
देहरी लौं तेरी नारि चलैगी, बड़ी पौंरि लौं माई।
मरघट लौं सब बीर भतीजे, हंस अकेलो जाई॥ ३॥
द्रव्य गड़े अरु महल खड़े ही, पूत रहैं घर माहीं।
जिन के काज पचे दिन राती, सो संग चालत नाहीं॥ ४॥
देव पितर तेरे काम न आवैं, जिन की सेवा लावै।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, हरि बिन मुक्ति न पावै॥ ५॥

शब्द ४३
॥ राग हेली ॥

जग को आवन जान, हेली या को सोक न कीजे।
यह संसार असार है, हेली हरि सूँ करि पहिचान॥ १॥
कुटंब संग आयो नहीं, हेली ना कोइ संग को जाय।
ह्याँई मिलैं हियाँई बीछुरैं, ता को झुरै बलाय॥ २॥
महल द्रव्य किस काम के, हेली चलें न काहू साथ।
राम तजे इन सौं पगे, हारो अपने हाथ॥ ३॥
जीवत काया धोवते, हेली तेल फुलेल लगाय।
मजलिस करि कै बैठते, मूए काग न खाय॥ ४॥
ला भये हरषै नहीं, हेली हानि भये दुख नाहिँ।
ज्ञानी जन वहि जानिये, सब पुरुसन के माहिँ॥ ५॥
गुरु सुकदेव चितावई, हेली चरनदास हिय राखि।
मनुष जन्म दुर्लभ मिले, वेद कहत हैं साखि॥ ६॥

शब्द ४४
॥ राग हेली ॥

हरि पाये फल देख, हेली पावत ही खोई गई।
[1]जात अटक कुल खोय गये, हेली खोये वरन अरु भेस॥ टेक॥

जन्म मरन सब खो गये, हेली बंध मुक्ति गये खोय।
ज्ञान अज्ञान न पाइये, नेम धर्म नहिँ होय ॥ १ ॥
लाज गई अरु भय गये, हेली साथहिँ गई उपाध।
आसा अरु करनी गई, खोये बाद बिबाद ॥ २ ॥
मैं नाहीं हरि ही रहे, तू दौरत हरि ओट।
पावैगी जब जानि है, हरि पावन की खोट[1] ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव सुनाइया, हेली चरनदास मन सोच।
सब बातन सोँ जायगी, रहै न तेरो खोज ॥ ४ ॥

शब्द ४५

॥ राग हेली ॥

अचरज अलख अपार, हेली वा की गति नहीं पाइये।
बहु निषेध जो पै करै, हेली तौ जावैगा हार ॥ टेक ॥
बानी थकि बुधि हूँ थकै, हेली अनुभय थकि थकि जाय।
ब्रह्मादिक सनकादि हूँ, नारद थकि गुन गाय ॥ १ ॥
वेद थके अरु ब्यास हूँ, हेली ज्ञानी थके अरु ज्ञान।
संकर से जोगी थके, करि करि निर्मल ध्यान ॥ २ ।
बहुतक कथि कथि हीं गये, हेली नेक न लिपटी बुद्ध।
वाचक ज्ञानी कहत हैं, हमने पायो सुद्ध ॥ ३
पाँचो ईन्द्रिन सूँ लखै, हेली ताकूँ साँचि न मानि।
जो जो इन सूँ देखिये, तिनकी निस्चय हानि ॥ ४ ॥
गुरु सुकदेव सुनावई, हेली समझ चरन हीं दास।
अपने ही परकास में, आप रहा परकास ॥ ५ ॥

(१) 'खोट' के मानी 'खराबी' के हैं—यह लफ़्ज़ ताना के तौर पर इस्तेमाल कि[illegible] है यानी हरि जब मिलेंगे तब मजा मालूम होगा कि कुछ बाक़ी न रहैगा।

शब्द ४६

॥ राग काफी ॥

इन नैनन निराकार लहा ।
कहन सुनन की कौन पतीजै, जान अजान ह्वै सहज रहा ॥१॥
जित देखौ तित अलष निरंजन, अमर अडोल अबोल महा ।
जोति जगत बिच झिलमिल झलकै, अगम अगोचर पूरि रहा ॥२॥
अलख लखा जब बेगम हूआ, भर्म कोट जब तुर्त ढहा ।
सर्व भई सब ऊपर राजै, सुन्न सरूपी ठोस ठहा ॥३॥
जीवन मुक्त भया मन मेरा, निर्भय निर्गुन ज्ञान महा ।
गुरु सुकदेव करी जब किरपा, चरनदास सुख सिंध बहा ॥४॥

शब्द ४७

॥ राग बिहागरा ॥

अरे नर हरि का हेत न जाना ।
उपजाया सुमिरन के काजे, तैं कछु औरै ठाना ॥ १ ॥
गर्भ माहिं जिन रच्छा कीन्ही, ह्वाँ खाने कूँ दीन्हा ।
जठर अगिन सों राखि लियो है, अँग संपूरन कीन्हा ॥ २ ॥
बाहर आय बहुत सुधि लीन्ही, दसन[1] बिना पय प्यायो ।
दाँत भये भोजन बहु भाँती, हित सों तोहिं खिलायो ॥ ३ ॥
और दिये सुख नाना बिधि के, समुझि देख मन माहीं ।
भूलो फिरत महा गर्बायो, तू कछु जानत नाहीं ॥ ४ ॥
तुव कारन सब कछु प्रभु कीन्हो, तू कीन्हा निज काजा ।
जग ब्योहार पगो हीं बोलै, तोहिं न आवै लाजा ॥ ५ ॥
अजहूँ चेत उलट हरि सौंहीं[2], जन्म सुफल करु भाई ।
चरनदास सुकदेव कहैं यों, सुमिरन है सुखदाई ॥ ६ ॥

---

(१) दशन = दाँत । (२) ओर, तरफ़ ।

शब्द ४८

॥ राग सारंग ॥

दुनिया मगन भये धन धाम ।
लालच मोह कुटुंब के पागे, बिसरि गये हरि नाम ॥ १ ॥
एक घरी छुटकारो नाहीं, बधि रहे आठौं जाम ।
पाँच पहर धंधे में माते, तीन पहर सँग बाम[1] ॥ २ ॥
फूले फिरत महा गर्बाये, पवन भरे ये चाम ।
दीप कलस ज्यों बिनसि जायगो, या तन को यहि काम ॥ ३ ॥
साधु संग गुरु सेव न कीन्ही, सुमिरे ना श्री राम ।
चरनदास सुकदेव कहत हैं, कैसे पावो ठाम ॥ ४ ॥

शब्द ४९

॥ राग काफी ॥

चला आवे चलावे[2] का द्योस[3], कछु करिले भाई ॥ टेक ॥
ह्याँ से चलना होय अचानक, फिर पाछे रहै अफसोस ॥ १ ॥
पी के बिषय मदिरा मतवारा, होय रहा बेहोस ॥ २ ॥
बाट में सूल बबूल घने, अरु जाना है कइ कोस ॥ ३ ॥
दम ही दम ही दम छीजत है, पल पल घटै तन जोस[4] ॥ ४ ॥
माया मोह कुटुंब सुख ऐसे, जैसे दीखै मोती ओस ॥ ५ ॥
सुकदेव दियो किरपा करि कै, राम रस का प्याला नोस[5] ॥ ६ ॥
चरनदास कहैं यह बात भली, सुनि लीजै दोनों गोस[6] ॥ ७ ॥

शब्द ५०

॥ राग सोरठ व सारंग ॥

पाँचन मोहिँ लियो बिलमा[7] ।
नासा तुचा और सरवनिया, नैनन अरु रसना ॥ १ ॥
एक एक ने वारी बाँधी, गहि गहि लै लै जाहिँ ।
निसि दिन उनहीं के रस पागो, घर में ठहरत नाहिँ ॥ २ ॥

---

(१) स्त्री । (२) चाला, कूच । (३) दिवस=दिन । (४) बल । (५) पी । (६) गोश=कान । (७) रिझाय लिया ।

अलि[1] पतंग गजमीन मृगा ज्यों, ह्वै रह्यौ पर आधीन।
अपनो आप सँभारत नाहीं, बिषय वासना लीन ॥ ३ ॥
ह्वै कुलवंती टोना सीखो, अनहद सुरति धरौं।
गगन मंडल में उलटा कूवाँ, तासौं नीर भरौं ॥ ४ ॥
भँवर गुफा में दीपक बारौं मंतर एक पढ़ौं।
काम क्रोध मद लोभ होम करि लालन[2] चित्त हरौं ॥ ५ ॥
जतन जतन करि पीव छुटाओं, फिर नहिं जानन दौं।
चरनदास सुकदेव बतावैं, निज मनहीं कर लौं ॥ ६ ॥

करनी

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

अरज करै कर जोरि कै, यह चरनन को दास।
ए हो श्री सुकदेव जी, कछु पूँछन की आस ॥ १ ॥

गुरु बचन

॥ दोहा ॥

पूँछो मन कूँ खोल करि, मेटौं सब संदेह।
अरु तुम्हरे हिरदय बिषै, सदा हमारो ग्रेह ॥ २ ॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

मैं तौ चरनहिं दास हौं, तुम तौ परम दयाल।
एकन पग पनहीं नहीं, एक चढ़ैं सुख पाल ॥ ३ ॥
यही जो मोहिं बताइये, एक मुक्ति को जाहिं।
एक नरक को जाय करि, मार जमौं की खाहिं ॥ ४ ॥
एक दुखी इक अति सुखी, एक भूप इक रंक।
एकन को बिद्या बड़ी, एक पढ़े नहिं अंक ॥ ५ ॥

---

(१) भँवरा। (२) प्रीतम।

एक कोन मेवा मिलै, एक चने भी नाहिं।
कारन कौन दिखाइये, करि चरनन की छाँहिं ॥ ६ ॥
यही मोहिं समझाइये, मन का धोखा जाय।
ह्वै करि निस्संदेह मैं, रहों चरन लिपटाय ॥ ७ ॥

गुरु बचन

॥ दोहा ॥

जिन जैसी करनी करी, तैसे ही फल पाय।
भुगतत हैं वे जगत में, ता कूँ बदला पाय ॥ ८ ॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

चरनदास यों कहत हैं, सुनो गुरू सुकदेव।
ज्यौं करि होवहिं कर्म हूँ, ता कूँ कहिये भेव ॥ ९ ॥

गुरु बचन

॥ चौपाई ॥

कहि सुकदेव संदेह मिटाऊँ। ज्यौं की त्यौं पूरी समझाऊँ ॥
खोंटी करनी नरक हिं जावै। पाप छीन मृत लोक हिं आवै ॥
भले कर्म जा स्वर्ग मँझारा। पुन्न छीन मृत लोक हिं डारा ॥
ऐसे लोक लोक फिरि आवै। कर्म न छूटै दुख सुख पावै ॥
जैसे कर्म छुटै सो कहूँ। तो पै दया करत हीं रहूँ ॥
खोंटे कर्म सु सकल निवारै। सुभ करनी कूँ नीके धारै ॥
जा के फल कूँ मन नहिं लावै। ह्वै निष्कर्म परम सुख पावै ॥
फल त्यागै सोइ चरनहिं दासा। चरन कमल की राखै आसा।१०।

॥ दोहा ॥

सो पावै निर्वान पद, आवा गवन मिटाय।
जनम मरन होवै नहीं, फिरि फिरि काल न खाय ॥ ११ ॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

जो जो कहि गुरुदेव जी, सो सो परी प्रतच्छ ।
चरनदास कूँ दीजिये, साध होन की सिच्छ ॥ १२ ॥

गुरु बचन

॥ दोहा ॥

वही साधवी जानिये, निरवारै सब कर्म ।
तन मन बचन सधे रहैं, पालै अपना धर्म ॥ १३ ॥
पहिले साधै बचन कूँ, दूजे साधै देह ।
तीजे मन कूँ साधिये, उर सूँ राखै नेह ॥ १४ ॥
जिन हीं के उपदेस कूँ, राखै अपनो चित्त ।
ता कूँ मनन सदा करै, भूलै नहिं नित मित्त ॥ १५ ॥

शिष्य बचन

॥ दोहा ॥

जो जो कही सो जानिया, ए हो श्री सुकदेव ।
साधन तन मन बचन कूँ, सब हीं कहिये भेव ॥ १६ ॥

गुरु बचन

॥ दोहा ॥

सिष्य सो तो सों कहत हौं, नीके सुन दै कान ।
ज्यों ज्यों कर्म बचैं दसौं, ता की करि पहिचान ॥ १७ ॥

बचन के कर्मों का निर्णय

॥ चौपाई ॥

प्रथम बचन के चार सुनाऊँ । तेरे चित में नीके लाऊँ ॥
एक यही जो झूठ न बोलै । साँच कहै तब हिरदय तोलै ॥
झूँठ कहन को पातक भारी । जो जप करै सो देहि उजारी ॥

झूँठे का जप लागत नाहीं। सिद्ध होय नहिं निस्फल जाहीं ॥
अरु झूँठे की नहिं परतीतें। झूँठे की खोटी सब रीतें ॥
दूजे निन्दा नाहीं करिये। पर के औगुन चित्त न धरिये ॥
निन्दा का भारी है पाप। या सूँ भी निस्फल है जाप ॥
तीजे कड़ुवा बचन न भाखै। सब जीवन सों हित हीं राखै ॥
खोटा बचन महा दुखदाई। जो साधै सो अति बलदाई ॥
खोटा बचन तपस्या खोवै। नरक माहिं ले जाय समोवै ॥
मीठे बचन बोलि सुख दीजै। उन के मन का सोक हरीजै ॥
कहै सुकदेवा चौथा सुनिये। चरनदास लै मन में गुनिये ॥१८॥

॥ दोहा ॥

चौथे मौन गहे रहै, लच्छन अधिक अमोल।
कर्म लगै जग बात सों, हरि चरचा में खोल ॥ १९ ॥

तन के कर्मों का निर्णय

तन सों तीनि कर्म जो लागें। सो मैं कहूँ तुम्हारे आगे ॥
चोरी जारी अरु हिंसा है। इन पापन सों भारी भय है ॥
कर्म छुटै जाकी बिधि गाऊँ। भिन्न भिन्न तो कूँ समझाऊँ ॥
तन सों चोरी कबहुँ न कीजै। काहू की नहिँ बस्तु हरीजै ॥
चोरी त्यागै सो सतबादी। ता पर रीझैं राम अनादी ॥
जारी के कर्म ऐसे मानो। पर तिरिया कूँ माता जानो ॥
तीजे हिंसा त्यागहिं कीजै। दया राखि जीवन सुख दीजै ॥
दया बराबर तप नहिँ कोई। आतम पूजा ता सों होई ॥
कर्म छुटन की भारी गैला। ज्यों साबुन उजला पट[1] मैला ॥
सुकदेवा कहैं तन के कहे। तीन कर्म अब मन के रहे ॥

---

(१) वस्त्र।

मन के कर्मों का निर्णय

॥ दोहा ॥

कहों जो मन के तीन अब, झीनी जिन की बात ।
गुरू दिखाये दीखई, विधि औरी न दिखात ॥ २० ॥
खोंटी चितवन बैर हीं, अरु तीजा अभिमान ।
इन सों कर्म लगैं घने, मेटैं संत सुजान ॥ २१ ॥

॥ चौपाई ॥

टी चितवन खोलि दिखाऊँ । जा सों कहिये सो समुझाऊँ ॥
हूँ चितवै पर नारी कूँ । कबहूँ चितवै फल बारी कूँ ॥
ही मन में भोगै भोग । हाथ न आवै उपजै सोग ॥
हूँ चितवै वा कूँ मारौं । कबहूँ चितवै फाँसी डारौं ॥
हूँ चितवै द्रव्य चुराऊँ । वा को धन अपने घर लाऊँ ॥
ति भाँति चितवन उपजावै । बुरे मनोरथ कर्म लगावै ।
तें या का करै उपाऊ । होय जो साधू कर्म छुटाऊ ॥
चितवै तो हरि गुरु चरना । ब्रह्म बिचार सदा ही करना ॥
ाँटी चितवन चितवै नाहीं । सदा रहै थिरता के माहीं ॥
हि सुकदेव सो हिरदै रहै । इत उत कूँ चित नाहीं बहै ॥२२।

॥ दोहा ॥

दूजा कर्म जो बैर है, महा पाप की पोट ।
सदा हिया जलता रहै, करै खोंट ही खोंट ॥ २३ ॥

॥ चौपाई ॥

र भाव में औगुन भारी ! तन छूटै जा नरक मँझारी ॥
री याद रहै मन माहीं । हरि सों हेत लगन दे नाहीं ॥
ा तें बैर भाव नहिँ कीजे । या कूँ कर्म लाग नहिँ दीजे ॥
रु तीजा जानो अभिमाना । गुरु किरपा सों ता कूँ जाना ॥
हूँ हूँ हूँ करता रहै । नीची होय तो अंतर दहै ॥
फूलै मन के माहीं । मो समान कोउ ऊँचा नाहीं ॥

मैं हौं यों कर यों कर करिया । सो बिन कारज कछू न सरिया ॥
अपने को चतुरा बहु जाने । और सबन कूँ मूरख माने ॥
अभिमानी ऐसा मन लावै । हरि के गुन किरिया बिसरावै ॥
गर्ब भरा खोटी बृत धारै । अपने मन में कबहुँ न हारै ॥
सुकदेव कहैं याही पहिचानो । नरक जायगा निस्चय आनो ॥
रन जीता सुन अभिमान न कीजै । कर्म बचाय परम सुख लीजै ॥२

सुभ असुभ कर्म फल के दृष्टांत

॥ दोहा ॥

कृत्यघनी[१] बेमुख भवै, गुरु सोँ बिद्या पाय ।
उन कूँ जानै तनक हीं, आपन कूँ अधिकाय ॥ २५ ॥

॥ चौपाई ॥

जैसे इक दृष्टांत सुनाऊँ । कथा पुरानी कहि समुझाऊँ ॥
महा पुरुष इक स्वामी पूरा । ज्ञान ध्यान में था भरपूरा ॥
लच्छन सभी हुते वा माहीं । आठ पहर हरि हीं की ध्याहीं ॥
उनको सिष्य आन इक भयो । वहि उपदेस जो नीको दयो ॥
करि कै प्यार निकट जो राखै । प्रीति करी अरु सब कुछ भाखै ॥
फिर रामत की आज्ञा लीन्ही । उन हूँ करि किरपा तब दीन्ही ।
पहुँचा एक नगर अस्थाना । ह्वाँ के नरन सिद्ध बड़ जाना ।
ठहराया अरु पूजा कीन्ही । बहुत नरन ने कंठी लीन्ही ।
बहुतक प्रानी आवैं जावैं । संध्या भोर सीस बहु नावैं ।
महिमा देखि फूल मन [illegible] माहीं । कहा कि हम सम गुरु भी नाहीं ॥

॥ दोहा ॥

गद्दी पर बै[illegible]ठा रहै, तकिया बड़ी लगाय ।
बहुत रहैं अ[illegible] विषे, सिर पर चँवर ढुराय ॥ २७ ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु परताप नहीं वह जानै । अपनी ही बुधि बड़ी जु ठानै ॥
मूरख आगे क्यों नहिँ भया । दीन होय करि द्वारे गया ॥
थोड़े ही से बहु इतराना । गुरु की कृपा प्यार ना जाना ॥
बार बार सोचै मन सोई । हमरौ गुरु क्या ऐसो होई ॥
उन कूँ तो नर कोइ कोइ जानै । हम कूँ सिगरो देस बखानै ॥
दिन दिन बढ़ता दीखै आगे । मेरे भाग बड़े हीं जागे ॥
मेरे मन में ऐसी आवै । उनका सिष्य जु कौन कहावै ॥
वहीं अचानक गुरु ह्वाँ आया । बैठे हीं सिर सिष्य नवाया ॥२८

॥ दोहा ॥

जैसे आते बैसनौ, करता वह डंडौत ।
ऐसे ही गुरु से किया, आदर किया न भौत[1] ॥ २९ ॥

॥ चौपाई ॥

देखि गुरू मन हाँसी ठानी । वाकूँ जाना बहु अभिमानी ॥
मुख सूँ कह कर बहु भिड़कारा । कहा कि तू अभिमानी भारा ॥
नीकी बुधि तेरी गइ खोई । बसी मूर्खता घट में सोई ॥
मेरा सब उपदेस बिसारा । जग मोहन कूँ मन में धारा ॥
दस बीसन कूँ सिष करि भूला । गद्दी पर बैठो बहु फूला ॥
सिष ने कहा और क्या कीया । वही किया अज्ञा तुम दीया ॥
तुमने हीं सतसंग बताई । कीजो दीजो जिन मन लाई ॥
सिष्य सखा करि संग बढ़ाई । मेरी तुम्हरी भई बड़ाई ॥
देखि ईर्षा तुम कूँ आई । हमरी देखी बहु अधिकाई ॥
फिरि हँसि गुरु कहि तू अज्ञानी । मैं कहि संगति तैं नहिं जानी ॥
मैं कहि भक्तन का संग कीजे । सत पुरुषन के चरन गहीजे ॥
दिन दिन ज्ञान होय सरसाई । हरि गुरु से है प्रीति सवाई ॥
तेरी तो गति औरै भई । महा अविद्या में मति ठई ॥

(१) बहुत ।

॥ दोहा ॥

झरना मूँदे ज्ञान के, छाय रहा अज्ञान।
राम रुठावन हीं किया, भई मुक्ति की हान ॥ ३१ ॥
कहा बात पूँजी कहा, इतने में गयो भूलि।
मति ओछी घट थोथरा, ता पर बैठो फूलि ॥ ३२ ॥
बिभव प्राप्त ते सिद्ध जो, देह बिसरजन होय।
वह बीनो गुरु को तजै, जाय नरक को सोय ॥ ३३ ॥
कछु तपस्या ना करी, नाहिं किया कछु जोग।
नातरु लगो समाधि हीं, ले बैठो तू भोग ॥ ३४ ॥
रज गुन तम गुन ले लिया, तजा सतो गुन अंग।
हरि गुरु को दइ पीठ हीं, करि बिषयन कूँ संग ॥ ३५ ॥
भक्ति भाव कूँ छोड़ि कै, करी दंभ की हाट।
मुक्ति पंथ कूँ तजि दिया, लई नरक की बाट ॥ ३६ ॥
इन बातन सों क्या सरै, बहुत भया बिख्यात।
तुम से अधिकी मूढ़ नर, जग के घने दिखात ॥ ३७ ॥
हुकुम बड़ा माया बड़ी, नामी बड़े जु भूप।
नर नारी बहु टहल में, सुंदर अधिक अनूप ॥ ३८ ॥
संतन की गति और है, हरि गुरु से सन्मुक्ख।
मुक्त होय छूटैं सबै, जन्म मरन के दुक्ख ॥ ३९ ॥
जगत बड़ाई में फँसे, परी अबिद्या छाहिं।
नरक भुगति जम दंड हीं, फिरि चौरासी माहिं ॥ ४० ॥

॥ चौपाई ॥

हरि औ गुरु को सिर पर धरिये। सतपुरुषन को संगति करिये ॥
रहिये साधुन के संग माहीं। ध्यान भजन जहँ छूटै नाहीं ॥
परिपक्क जहाँ मन रहो। गुरु मत दया दीनता गहो।
ज सहज उपदेस लगावो। भूले कूँ हरि बाट बतावो।

तारन तरन बहुत जन भये। छिमा दीनता धारे गये ॥
पै उन कूँ अभिमान न आया। नेक न पड़ी अबिद्या छाया ॥
आपा मेटि गुरू हीं राखा। जब बोले तब गुरु हीं भाखा ॥
तू अभिमानी जन्म गँवाया। पाप बोझ सिर घना उठाया ॥४१

॥ दोहा ॥

वोहीं नभ की ओर से, बानी भई जु आय।
कियो गुरू से मान तैं, चौरासी कूँ जाय ॥ ४२ ॥
ह्वाँ सूँ गुरु रमते भये, सिष्यहिँ दे फटकार।
कहा कि तेरे तन बिषे, हूजो बड़ो बिकार ॥ ४३ ॥
ता पीछे कछु दिनन में, देही भयो बिकार।
निकट न आवे तासु के, ह्वाँ के कोउ नर नार ॥ ४४ ॥
कुष्ट भयो अर्धङ्ग को, रहो न काहू जोग।
आठ पहर वा कूँ भयो, निरा सोग ही सोग ॥ ४५ ॥
तन तजि कै नरकै गयो, फिरि चौरासी माहिँ।
जो गुरु से मानै करै, ता की गति है नाहिँ ॥ ४६ ॥
कहैं गुरू सुकदेव जी, चरनदास परबीन।
मन सों तजि अभिमान कूँ, गुरु सों रहिये दीन ॥ ४७ ॥
मान न काहू सूँ करै, सब हीं सूँ आधीन।
समरथ हरि की भक्ति में, जगत काज सों हीन ॥ ४८ ॥
दस कर्मों कूँ जानिये, महा पाप की खान।
तन मन बचन संभारिये, यही जु अधिक सयान ॥ ४९ ॥

दृष्टांत

॥ दोहा ॥

कहूँ एक दृष्टांत हीं, सो परमारथ भेस।
सुनि समुझै हिरदै धरै, तौ लागै उपदेस ॥ ५० ॥
रहै सोहावन नगर इक, बसैं लोग सुखमान।

नर नारी सुन्दर सबै, अरु धनवंत बखान ॥ ५१ ॥
नया करैं जहँ भूप हीं, बरष दिना के माहिँ ।
संबत बीते तासु के, फिर वे राखैं नाहिँ ॥ ५२ ॥

॥ चौपाई ॥

डारि देयँ नदी के पारा । जहाँ भयानक अधिक उजारा[१] ॥
पसू आदि ताकूँ भखि जावैं । सुपना सा देखै बिनसावै ॥
नया भूप करि अज्ञा मानैं । ताकूँ अपना ईसुर जानैं ॥
रहैं हुकुम माहीं कर जोरैं । वा कूँ बचन न कबहूँ मोरैं ॥
छत्तर धारी ह्वाँईं डारैं । सो मैं आगे कही उजारैं[१] ॥
कई सैकड़ों ऐसे भये । चेते नाहीं निस्फल गये ॥
राजा नया और इक किया । सो वह समझा चेता हिया ॥
मन हीं मन में कहै बिचारे । बहुत भूप जंगल में डारे ॥५३॥

॥ दोहा ॥

बरस दिना जब बीति है, हमहुँ क देहैं डारि ।
सरिता हीं के पार हीं, अधिको जहाँ उजारि[१] ॥ ५४ ॥

॥ चौपाई ॥

या कूँ कछू उपाय बिचारौं । ता सेती यह जन्म न हारौं ॥
एक दिना उन यही बिचारा । देखन गयो नदी के पारा ॥
जहाँ भूप जा जा करि मरते । तिन के हाड़ ह्वईं जा गिरते ॥
खड़ा जु होय देखि मन आई । नीको ठौर बनाऊँ ह्याँईं ॥
दृष्टि उठाय ऊँचि जो कीन्ही । कामदार कूँ आज्ञा दीन्ही ॥
वन काटो अज्ञा दइ एता । फेरक पाँच कोस में जेता ॥
सुंदर सा इक कोट बनावो । ता में सुन्दर बाग रचावो ॥
करो हवेली ता के माहीं । जैसी भूपन हूँ के नाहीं ॥
गिलम[२] बिछौने परदे लावो । औ तैयारी सबै करावो ॥
होय चुकै जब मोहिँ सुनावो । बहुत इनाम अधिक तुम पावो ॥

(१) उजाड़ । (२) गलीचा ।

॥ दोहा ॥

वैसे हीं बनने लगी, जैसी अज्ञा दीन ।
बनते बनते बन चुकी, सुन्दर अधिक नवीन ॥ ५६ ॥

॥ चौपाई ॥

फिरि राजा कूँ आनि सुनाया । राजा सुनि बहुतै सुख पाया ॥
आछी वस्तु वहाँ पहुँचाई । ह्याँ जो रही न सुरति लगाई ॥
कहा कि एक दिना ह्वाँ जाना । छिन छिन होय अवधि की हाना ॥
पाँचक गाँव कोट के साथा । किये दिये लिखि अपने हाथा ॥
अपना एक हितू मन भाई । भरी कचहरी लिया बुलाई ॥
करि इनाम ता कूँ वह दिया । वा कूँ देखा साँचा हिया ॥
और कही जो राजा होवै । वाहि तिलाक याहि जो खोवै ॥
वोहीं आठ महीने बीते । करनी करि भये मन के चीते ।५७।

॥ दोहा ॥

ह्वै निचिंत आनंद भये, चिंता भय नहिं कोय ।
अपना कारज करि चुके, ह्याँ ह्वाँ एकहिं होय ॥ ५८ ॥

॥ चौपाई ॥

सुख ही में वह बर्ष बिताया । अवधि बीति फिरि वह दिन आया ॥
सब उमराव[1] जो घिरि कर आये । नया भूप करने कूँ लाये ॥
यहि सिंहासन सूँ दियो डारी । कहा कि तुम्हरी बीती बारी ॥
ऐसे कहि कर गहि लै चाले । पार नदी के जंगल घाले ॥
[illegible]भ करनी कूँ करि वह राजा । अपने महलन जाय विराजा ॥
[illegible]से भी उत सुख बहु भारी । ना कोइ वैरी ना जंजारी ॥
अपनी करनी से सुख पावै । रहै असोक न चिंता आवै ॥
[illegible]हि सुकदेव चरन हीं दासा । सुभ करनी करि पाया वासा ॥५६

---

(१) अमीर ।

हिय हुलसो आनंद भयो, रोम रोम भयो चैन।
भये पवित्तर कान ये, सुनि सुनि तुम्हरे बैन ॥ ७९ ॥
गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु, गुरू देवन के देवा।
सर्व सिद्धि फल देव, गुरू तुम मुक्ति करेवा ॥ ८० ॥
गुरु केवट तुम होय, करो भव सागर पारी।
जीव ब्रह्म करि देत, हरो तुम ब्याधा सारी ॥ ८१ ॥
श्री सुकदेव दयाल गुरु, चरनदास के सीस पर।
किरपा करि अपनो कियो, सबहीं बिधि सूँ हाथ धरि ॥ ८२ ॥
आदि पुरुष परमात्मा, तुम्हैं नवाऊँ माथ।
चरनन पास निवास दे, कीजे मोहिँ सनाथ ॥ ८३ ॥
तुम्हरी भक्ति न छोड़ हूँ, तन मन सिर क्यों न जाव।
तुम साहब मैं दास हूँ, भलो बनो है दाव ॥ ८४ ॥
आपै भजन करैं नहीं, औरै मने करैं।
चरनदास वै दुष्ट नर, भ्रम भ्रम नरक परैं ॥ ८५ ॥
औरन कूँ उपदेस करि, भजन करैं निष्काम।
चरनदास वै साध जन, पहुँचैं हरि के धाम ॥ ८६ ॥
भक्ति पदारथ उदय सूँ, होय सभी कल्यान।
पढ़ै सुनै सेवन करै, पावै पद निर्बान ॥ ८७ ॥
भक्ति पदारथ में कही, कछु इक भेद बखान।
जो कोइ समझै प्रीत सूँ, छूटै जम दुख सान ॥ ८८ ॥
सुन्न सहर हम बसत हैं, अनहद है कुल देव।
अजपा गोत बिचारि ले, चरनदास यहि भेव ॥ ८९ ॥
दीद सुनीद जहाँ नहीं, तहाँ न हाल न काल।
जोहर जिसम इसम नहीं, चरनदास नहिं खाल ॥ ९० ॥

❀ समाप्त ❀

हिन्दी पुस्तक माला का सूचीपत्र

काव्य-निर्णय	१॥)
अयोध्या काण्ड	⌐)
आरण्य काण्ड	१)
सुन्दर काण्ड	१)
उत्तर काण्ड	१)
गुटका रामायण सजिल्द	॥।)
तुलसी ग्रन्थावली	६)
श्रीमद् भागवत	॥।)
सचित्र हिन्दी महाभारत	५)
विनय पत्रिका	६)
विनय कोश	४)
फ्रान्स की राज्य क्रान्ति का इतिहास	।=)
कवित्त रामायण	।=)
हनुमान बाहुक	–)॥
सिद्धि	॥)
प्रेम परिणाम	॥)
सावित्री और गायत्री	॥।)
कर्मफल	॥।)
महारानी शशिप्रभा देवी	१।)
द्रौपदी	॥।)
नल-दमयन्ती	॥।)
भारत के वीर पुरुष	२)
प्रेम-तपस्या	॥)
करुणादेवी	॥।)
उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा (सचित्र)	॥)
संदेह (सजिल्द)	१।)
नरेन्द्र भूषण	१)
युद्ध की कहानियाँ	।=)
गहर पुष्पाञ्जलि	॥।)
दुःख का मीठा फल	१)
नव कुसुम (प्रथम भाग)	॥।)
,, (द्वितीय ,,)	॥)

नाट्य पुस्तकमाला—

पृथ्वीराज चौहान	१)
समाज चित्र	॥।)
भक्त प्रह्लाद	॥)

बाल पुस्तकमाला—

सचित्र बाल शिक्षा	(प्र० भा०)	।)
,, ,,	(द्वि० ,,)	।=)
,, ,,	(तृ० ,,)	॥)
दो वीर बालक		॥)
घोंघा गुरु की कथा		।)
बाल विहार (सचित्र)		=)
हिन्दी कवितावली		=)
,, साहित्य प्रदीप		॥)
सती सीता		॥)
स्वदेश गान	(प्र० भा०)	–)
,,	(द्वि० ,,)	–)
,,	(तृ० ,,)	–)

चित्र माला—

प्रथम	भाग	॥।)
द्वितीय	,,	॥।)
तृतीय	,,	१)
चतुर्थ	,,	१)
चारों भाग एक साथ लेने से		३।)

संत महात्माओं के चित्र—

दादूदयाल	=)
मीराबाई	=)
दरिया साहब (बिहार)	=)

कथा साहित्य

उलझी लड़ियाँ	(कहानी संग्रह)	१॥)
प्रवाह	(उपन्यास)	२॥)
चक्षु-दान	,,	१॥)

पुस्तकें मँगाने का पता—मैनेजर, बेलविडियर प्रेस, इलाहाबाद—२

रामायण बड़ी पोथी, विनय पत्रिका, सुमनोऽञ्जलि, भारत की सती स्त्रियां स्टाक में नहीं हैं छप रही हैं—

एक साथ अधिक पुस्तक मंगाने वाले को तथा पुस्तक विक्रेताओं को संतोषजनक कमीशन दिया जावेगा।